ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शांतिधर्मी

मार्च, 2015

नव संवत्
सतत् शुभ हो

₹10

संस्मृतियाँ : स्व. पं. चन्द्रभानु आर्योपदेशक

हिन्दी साहित्य प्रेरक संस्था द्वारा आयोजित साहित्यकार सम्मान समारोह में स्व. श्री चन्द्रभानु आर्य को 'विमल शुभ स्मृति' सम्मान से सम्मानित करते संस्था के पदाधिकारी व अत्री परिवार के सदस्य।

डीएवी स्कूल जीन्द में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. सी. प्रकाश स्व. श्री चन्द्रभानु आर्य को सम्मानित करते हुए

आर्य समाज जीन्द शहर में आयोजित कार्यक्रम में सम्मानित करते हुए पदाधिकारी मा. रतन लाल, चौ. जिले सिंह व मा. मोहन लाल आर्य

जीन्द में आयोजित एक कार्यक्रम में पंडित जी का सम्मान करते हुए तत्कालीन सांसद चौ. सुरेन्द्र सिंह बरवाला

उचाना मण्डी में यज्ञ करवाते हुए स्व. पं. चन्द्रभानु आर्य। साथ में स्वामी गोरक्षानन्द जी, स्वामी धर्मानन्द जी, रामधारी शास्त्री (स्वामी रामवेश जी), मा. राय सिंह जी आदि

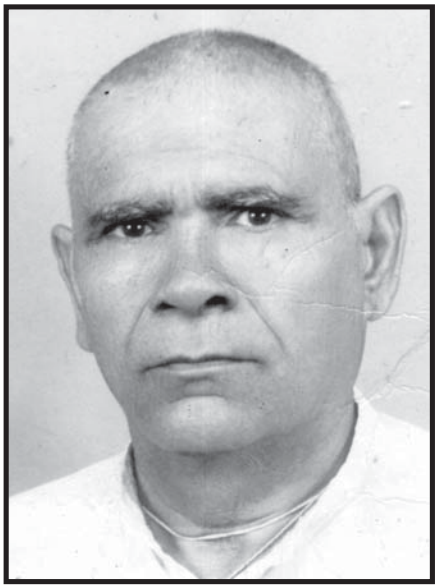

संस्थापक एवं आद्य सम्पादक

पं० चन्द्रभानु आर्य

सम्पादक : सहदेव समर्पित (चलभाष ०९४१६२-५३८२६)

उपसम्पादक : सत्यसुधा शास्त्री

प्रबंध संपादक : सुभाष श्योराण

आदरी सम्पादक : यज्ञदत्त आर्य

सह-सम्पादक : राजेशार्य आट्टा, डॉ० विवेक आर्य, नरेश सिहाग बोहल

सहयोग : आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, श्रीपाल आर्य, बागपत, महेश सोनी, बीकानेर, भलेराम आर्य, सांघी, कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी

विधि परामर्शक : जगरूपसिंह तंवर

कार्यालय व्यवस्थापक : रविन्द्रकुमार आर्य

कम्प्यूटर सज्जा : बिशम्बर तिवारी

सहयोग राशि

एक प्रति	:	१०.०० रु०
वार्षिक	:	१००.०० रु०
आजीवन	:	१०००.०० रु०

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शान्तिधर्मी

मार्च, २०१५

वर्ष : १७ अंक : २ चैत्र २०७२ विक्रमी

स ष्टि संवत्-१९६०८५३११६, दयानन्दाब्द : १९२

क्या? कहाँ?....

आलेख

श्रद्धांजलियाँ/संस्मरण ६

महिला दिवस की आड़ में पश्चिमी पाखण्ड ९

सब मनुष्यों का एक ही धर्म १०

वैदिक विज्ञान के मिथुन १४

भगतसिंह नास्तिक क्यों? १६

जप कैसे करें! (आध्यात्मिक-उन्नति) १९

पेट में गैस : कारण व उपचार (स्वास्थ्य चर्चा) २४

कहानीः तिनके का सहारा-२१, गुठली (हास्य कथा)-२७, मन की जंलीरें-२८

कविताएँ-२६

स्थायी स्तम्भ : आपकी सम्मतियाँ-५, बाल वाटिका-२६, अनुशीलन सामवेद आग्नेय पर्व-३४, समाचार-सूचनाएँ

आस्तिकवाद इस देश की धरोहर है। आस्तिकवाद की अनुभूति ही जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए काफी है।
-चन्द्रभानु आर्य

कार्यालय :

७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक,
जीन्द–१२६१०२ (हरियाणा)
दूरभाष : ९४१६२–५३८२६
ई-मेल-shantidharmijind@gmail.com

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

शान्ति प्रवाह

अहंकार का विसर्जन

❐प्राचीन काल में विद्यार्थियों को विनम्रता की शिक्षा देने के लिए भिक्षाटन कराया जाता था। अहंकार की वृत्ति का उन्मूलन-- व्यक्तित्व का एक श्रेष्ठतम गुण है। अहंकार व्यक्ति को अपने से दूर ले जाता है। अहंकारी व्यक्ति समाज की कितनी हानि कर सकता है, यह तो प्रायः लोग जानते हैं पर वह अपनी कितनी हानि करता है, इसे कम ही लोग जानते हैं। अहंकारी व्यक्ति परिस्थिति को ठीक से नहीं समझता। अपने को ही नहीं समझता। स्वयं के प्रति उसका आकलन अशुद्ध होता है, अतएव वह हर निर्णय गलत करता है। वह अपनी न्यूनताओं को नहीं देख पाता-फिर उन्हें दूर करने का तो प्रश्न ही कहाँ उत्पन्न होता है? उसकी उन्नति अवरुद्ध हो जाती है, बल्कि वह निरन्तर पतन की ओर ही जाता है।

❐मनुष्य जीवन प्राप्त करके भी यदि कोई उन्नति नहीं की तो क्या किया? उन्नति का अर्थ प्रायः धन सम्पत्ति, मान-प्रतिष्ठा को ही समझा जाता है। इस प्रकार की उन्नति का केवल वर्तमान जीवन में ही महत्त्व है, शाश्वत जीवन में इनका कोई मूल्य नहीं है। वर्तमान जीवन में भी धन-पद की उन्नति का कोई अर्थ नहीं, यदि आत्मिक उन्नति नहीं हुई। संसार में हम देखते हैं कि दिखने वाले बड़े लोग प्रायः कितने छोटे होते हैं। धन आया पर उदारता नहीं आई तो अलमारी या बैंक में बंद वह धन मिट्टी के समान ही है। बल प्राप्त किया, पर अभय प्राप्त नहीं किया- तो बल रक्षा नहीं कर सकता। आत्मा के गुण विकसित हों, तभी ये संसार के साधन कुछ काम आ सकते हैं।

❐मनुष्य की आत्मिक उन्नति तभी हो सकती है, जब वह अपनी न्यूनताओं को जाने। अपनी कमियों को जानकर ही वह उनको दूर करने का प्रयास कर सकता है। अहंकार अपनी कमियों को जानने में सबसे बड़ी बाधा है। उसे दूसरों की कमियाँ ही दिखती हैं। वह अपने आप को तो सर्वज्ञ समझता है, सीखेगा कैसे?

❐भिक्षाटन को आज के शिक्षाविद् अनुचित ठहरा सकते हैं, पर यह अहंकार के विसर्जन का अमोघ साधन था। भिक्षार्थ जाना ही बड़ी बात है, फिर उन्हें सब तरह के लोगों का सभी तरह का व्यवहार देखने का अनुभव मिलता है। उससे स्वभाव में नम्रता और सहनशक्ति का विकास होता था।

❐महामना गौतम अपने शिष्यों को भिक्षाटन की शिक्षा देते हैं। यदि गृही भिक्षा में तुम्हें कुछ न दे तो तुम कैसा अनुभव करोगे! शिष्य कहता है कि हम उसका धन्यवाद करेंगे कि उसने भले ही हमें भिक्षा में कुछ नहीं दिया, पर कम से कम उसने हमें गालियाँ तो नहीं दीं। गुरु पुनः पूछते हैं- यदि वे तुम्हें गालियाँ दें तो तुम क्या सोचोगे? शिष्य पुनः उत्तर देता है- तब मैं सोचूँगा कि उसने कम से कम मुझे प्रताड़ना तो नहीं दी, पीटा तो नहीं। गुरु ने पाठ पढ़ा दिया।

❐कुछ लोगों को यह विनम्रता कायरता लग सकती है, स्वाभिमान के विपरीत लग सकती है। पर यह गहन मनोविश्लेषण की बात है। विपरीत परिस्थियों में ऐसा व्यवहार कोई वीर पुरुष ही कर सकता है। यह कायर व्यक्ति के वश की बात नहीं है। नम्रता का अर्थ कायरता या आत्मसमर्पण नहीं है। नम्रता का अर्थ है कुछ प्राप्त करने की योग्यता। नम्रता वहीं रह सकती है, जहाँ वीरता हो। वीरता को युद्ध क्षेत्र में प्रकट करने के अवसर तो कम ही होते हैं, व्यवहार में वीरता को प्रकट करने के अवसर पल-पल मिल जाते हैं। वीरता वास्तव में शरीर में नहीं, आत्मा में होती है। शक्ति का स्रोत हमारे अन्दर है।

❐आत्मा की उन्नति इस लोक में भी और परलोक में भी-- सब प्रकार की सफलता प्राप्त करने का एकमात्र साधन है। आज व्यक्तित्व विकास के लिए इस बात पर बल दिया जाता है कि आप कैसे दिखते हैं। वास्तव में व्यक्तित्व विकास का अर्थ है कि आप वास्तव में कैसे हैं। आप विपरीत परिस्थियों में कैसा व्यवहार करते हैं, कोई आपके प्रतिकूल आचरण करे तो आपकी मनोस्थिति कैसी होती है, आप अपने शरीर और इन्द्रियों के स्वामी हैं या इनके गुलाम हैं, दूसरों की उन्नति देखकर आप कैसा अनुभव करते हैं, आपने अपने अन्तःकरण को शुद्ध किया है या नहीं, आप का कोई निर्णय लेने का मापदण्ड क्या है, आप सत्य व्यवहार करते हैं या नहीं?

❐अपनी कमियाँ देखना और उन्हें दूर करने का निरन्तर प्रयत्न करते रहना सबसे बड़ी वीरता है। सूखे पेड़ ही आँधियों में टूटते हैं। हरे भरे वृक्ष ही टिकते हैं। यह बात हम बचपन से पढ़ते-सुनते आ रहे हैं। आत्मचिन्तन और परमात्मा की उपासना से हमारे अहंकार का विसर्जन हो सकता है।

-सहदेव समर्पित

आपकी सम्मतियाँ

आज ही भेज दें मांग विशेष

शांतिधर्मी को घर मंगवाले।
पास पड़ौस में इसे पढ़ाले।।
जब-जब यह पढ़ने को मिलेगी,
ज्ञान पिपासा बढ़ने लगेगी।।
जिस घर पर यह दस्तक देगी,
नित्य पढ़ूँ ऐसे विवश करेगी।
पढ़कर होंगी सन्तान संस्कारवान्।
फिर देखना इसके चमत्कार।
ऋषिवर देव दयानन्द को जो भी पढ़ेगा।
स्वाध्याय की ओर बढेगा।
सद्ग्रंथों का है इसमें सार,
स्वस्थ मनोरंजन है भरपूर।
पाखण्डों से बिल्कुल दूर।।
अश्लीलता का काम नहीं है,
आप्त पुरुष देते सन्देश।
तत्त्ववेत्ता यदि बनना चाहें,
आज ही भेज दें मांग विशेष।।

-ईश्वरार्य प्रधानाध्यापक, मस्तापुर, रेवाड़ी

शांतिधर्मी का फरवरी अंक मिला, धन्यवाद! स्व० पं० चन्द्रभानु द्वारा लिखित शांतिप्रवाह व्यक्ति के निर्माण तथा अच्छे संस्कारों की मूलभूत आवश्यकता पर बल देने वाला तथा संयम और सहनशीलता की शिक्षा देने वाला है। सम्पादकीय 'अपनी बात' संवेदनशील है। दाताराम आर्य आलोक की कविता 'जीवन-पथ' प्रशंसनीय है। डॉ० सिद्धान्तालंकार के लेख से नवीन जानकारियाँ मिलीं। डॉ० मनोहरदास अग्रावत का लेख उपयोगी है। बालवाटिका की रचनाएँ भी ज्ञानवर्धक और मनोरंजक हैं। अन्य रचनाएँ भी इस अंक को चार चांद लगाने वाली हैं।

प्रो० शामलाल कौशल
९७५-बी/२०, ग्रीन रोड रोहतक-१२४००१

शांतिधर्मी के जनवरी व फरवरी अंक मिले। मुझे विश्वास है कि आप दिवंगत गुरुभ्राताश्री चन्द्रभानु आर्य के कार्य को कुशलतापूर्वक आगे बढ़ाएँगे। श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों के प्रचार-प्रसार और अविद्या, अंधविश्वास के निवारण के लिए शांतिधर्मी की विशिष्ट भूमिका है। इसको बढ़ाना और प्रचारित करना ईश्वरीय कार्य है। मेरे योग्य जो भी सेवा हो, नि:संकोच लिखें। मैं सदैव आपके साथ हूँ।

श्रीपाल आर्योपदेशक, वैदिक मिशनरी
आर्य भवन, खेड़ा हटाना, जनपद बागपत- (उ० प्र०)

चन्द्रभानु आर्य : व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व

शांतिधर्मी के संचालक और प्रधान सम्पादक व आर्यजगत् के महान् भजनोपदेशक श्री पण्डित चन्द्रभानु आर्य के विराट् व्यक्तित्त्व को जानने और जनाने के लिए 'चन्द्रभानु आर्य : व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व' बृहदाकार ग्रंथ पर पिछले एक वर्ष से कार्य चल रहा है। इस ग्रंथ में पण्डित जी की रचनाओं, जीवन यात्रा, संस्मरणों; साहित्यकार, कवि और उपदेशक के रूप में उनके योगदान पर प्रकाश डाला जाएगा। उनके सभी परिचितों, मित्रों, सहयोगियों, संबंधियों, श्रद्धालुओं, शिष्यों, संबंधित संस्थाओं के पदाधिकारियों से निवेदन है कि उनसे संबंधित संस्मरण, चित्र, आदि या किसी पुस्तक, स्मारिका आदि में उनका उल्लेख यदि आपके पास उपलब्ध है तो कृपया डाक या ईमेल से भिजवाने की कृपा करें। अन्यथा हमें सूचित करने का कष्ट करें। हम स्वयं आकर उन्हें स्केन/फोटोप्रति के रूप में प्राप्त करेंगे। शांतिधर्मी में प्रकाशित और अभी प्राप्त हो रहे संस्मरणों का भी उक्त ग्रंथ में सादर उपयोग किया जाएगा।

सम्पादक शांतिधर्मी,
756/3, आदर्श नगर, सुभाष चौक, जींद-१२६१०२
EMail- shantidharmijind@gmail.com
दूरभाष : 094165 45538, 094162 53826, 098964 12152
निवेदक : रमेशचन्द्र आर्य, सहदेव शास्त्री, रवीन्द्र कुमार आर्य (पुत्र)

श्रद्धांजली/संस्मरण

तपोनिष्ठ भजनोपदेशक, लेखक व साहित्यकार वैदिक धर्म के समर्पित प्रचारक, शांतिधर्मी के संस्थापक, संचालक व सम्पादक श्री पं० चन्द्रभानु आर्य जी का २३ दिसम्बर २०१४ को देहान्त हो गया। देश के कोने-कोने से श्रद्धांजली संदेश/संस्मरण प्राप्त हो रहे हैं, जिन्हें हम लगातार प्रकाशित कर रहे हैं। **-सम्पादक**

सूर्य चन्द्रमसाविव।। ऋ० ५/५१/१५।। सूर्य-चन्द्र के ही समान थे आर्य भजनोपदेशक श्री चन्द्रभान

माननीय पण्डित जी 'यथा नाम तथा गुण' के अनुसार सूर्य और चन्द्र जैसी उज्ज्वलकीर्ति के धनी थे, दृढ़ संकल्पवान् सत्य-निष्ठ धर्म प्रेमी सद्गृहस्थ थे। उनके स्वभाव में सूर्य जैसी तेजी और चन्द्र जैसी शीतलता थी, वे इन दोनों गुणों के अनुरूप ही थे। जिस प्रकार प्रातःकालीन सूर्य उदय होकर अपने प्रकाश से संसार का अन्धकार हर लेता है, पण्डितजी भी सभामंच के ऊपर उदयकालीन सूर्य के समान उपस्थित होकर स्वरचित समयानुकूल भजनों को बोलकर अनेक लोगों के अज्ञान अंधकार को हर लेते थे और सहज ही जनमानस में सद्ज्ञान के भाव जगा देते थे।

वे अपने उपदेशों के द्वारा लोगों के भ्रमभूत-अविद्याजन्य अनेकों भव-भय भ्रान्तियों के ताप का हरण कर लेते थे और लोगों के हृदयों में सरलता से अपना निश्चित स्थान बना लिया करते थे। उनका जोश-भरा वक्तव्य सूर्य की तेजस्वी उष्णता के समान होता था, जो दुरितों को 'दुरितानि परासुव' (यजु०।। ३०/३) दूर हटा कर लोगो के दिलों में- 'यद् भद्रं तन्नऽआसुव' के अनुसार अच्छे गुण, कर्म, स्वभावों को स्थापित कर दिया करता था।

जिस प्रकार 'सूर्य' रात्रि में उपस्थित कार्य गत्यावरोध को दूर करके सबको अपने-अपने कार्यों के सम्पादन की प्रेरणा देता है, ठीक उसी प्रकार पण्डितजी अपने भजनों के माध्यम से प्रसारित उपदेशों के द्वारा लोगों में 'श्रेष्ठतमाय कर्मणे' (यजु० १/१) के अनुसार शुभ कार्य करने के लिए नवचेतना भर देते थे। वे अपनी इस मृत संजीवन विद्या के द्वारा कई एक मृतप्रायः जीवनों में नवजीवन का संचार कर देते थे। उनकी आवाज बड़ी बुलन्द थी, वाणी जोशीली और ओज गुण से भरपूर थी। अपने जीवन के साठ-पैंसठ वर्ष तक ये महानुभाव सबके लिए सत्प्रेरणा के सतत् स्रोत बने रहे।

'चन्द्रमिव'- चन्द्र के समान- जैसे चन्द्र शीतल, सुखद हितकर आह्लादक होता है, वैसे ही ये आर्य महानुभाव भी खिलते चन्द्र के समान-हंसमुख, प्रसन्नचित्त-शीतल, सुखद स्वभाव के धनी थे। वे व्यवहार कुशल थे, उनकी वाणी सरल-सरस और शहद 'सी' मिठास से युक्त थी। उनके जीवन में सभ्यता-शिष्टता की गहरी पुट थी, इसलिए वे अपनी बातचीत व वक्तव्य के द्वारा लोगों को शीघ्र ही प्रभावित कर लेते थे, उनमें आश्चर्यकारिणी 'आकर्षण शक्ति' थी, उनकी वाणी सुनकर लोग खिंचे चले आते थे।

विशेष-संस्मरण

अनुमानतः पचास-पचपन वर्ष पुरानी बात है, जब मेरी आयु दस-बारह वर्ष रही होगी, पं० चन्द्रभानु जी भी नये-नये ही भजनोपदेशक बने होंगे, उनकी आयु भी पच्चीस-तीस वर्ष से अधिक न रही होगी। उस समय पहली बार आप अपनी भजनमण्डली को साथ लेकर आर्यसमाज का प्रचार करने के लिए मेरे जन्म के स्थान ग्राम शाहपुर में पधारे थे। आपने चन्द्रपाल-सुमित्रा देवी का इतिहास- स्वामी भीष्म जी द्वारा रचित भजनों के माध्यम से सुनाया था। लोग बड़े प्रभावित हुए और इतिहास की अन्तिम कड़ी समाप्त होने से पहले ही और अधिक समय तक भजन सुनाते रहने के लिए आग्रह किया तो आपने तत्काल एक देशभक्ति का गीत बनाकर सुनाया- उसकी तर्ज थी- 'मैं हूँ अलबेला तांगे वाला' इस 'गीत' में पण्डितजी ने पाकिस्तान, चीन और निजाम हैदराबाद को ललकारा है। उन दिनों भारत-पाक या चीन के साथ युद्ध होने वाला था।

-:भजनः-

ये है जागीर मेरी, प्यारी कश्मीर मेरी-
हटजा रे हटजा अभिमानी-मैं हूँ लड़ाका हिन्दुस्तानी।।टेक
देखने को दीखूँ मैं हूँ सादा भोला।
शत्रु पर पड़ता बनकर अग्नि का शोला।।
होने न दूँगा मनमानी- मैं हूँ लड़ाका हिन्दुस्तानी।।१।।
नलवा का नाम सुनकर बच्चे हैं जागते।
राणा के बेटे हैं हम, तुम पावोगे भागते।।
पर्दों में छुपेंगी पठानी- मैं हूँ लड़ाका हिन्दुस्तानी।।२।।
हैदराबाद करता रहा सदा हम से झगड़ा।
हमने घमण्डी चन्द मिनिटों में रगड़ा।।
झण्डा उतारा मुसलमानी- मैं हूँ लड़ाका हिन्दुस्तानी।।३।।
चन्द्रभान 'लव' ने ये लाहौर बसाया।
जिस पर तुमने नाहक कब्जा जमाया।।
अरब में जाओ सब किरानी- मैं हूँ लड़ाका हिन्दुस्तानी।।४।।

उनके इस जोशीले 'गीत' का सबके ऊपर बहुत

अच्छा प्रभाव पड़ा, श्रोताओं में जोश भर गया और यह 'गीत' सबके हृदयों को स्पर्श कर गया। पण्डितजी तो अपना एक-दो दिन का कार्यक्रम पूरा करके धर्म-प्रचार करने के लिए अन्यत्र चले गये परन्तु उनके इस गीत की स्मृति जन-जन के मानसपटल पर आज भी अंकित है। मैं उनके सद्व्यवहार और धर्मकार्य की लग्न से अब भी बहुत प्रभावित हूँ। पण्डित श्री चन्द्रभानु 'आशु' कवि और सफल आर्य भजनोपदेशक थे। उन्होंने ईश्वर-भक्ति, देश-प्रेम, सदाचार विषयक भजन लिखे, मूर्ति पूजा का खण्डन तथा एक ईश्वर का मण्डन किया, सामाजिक कुरीतियों को मिटाने के लिए अनेकों भजन-इतिहास लिखे, नशे-व्यसनों और दहेज प्रथा का विरोध किया, भ्रूण हत्या जैसी जघन्य पापमयी वृत्ति रोकने के लिए भी सुदृढ़ प्रयास किये, इस प्रकार अनेकों विषयों पर आपने भजन इतिहास लिखकर समाज की भारी सेवा की। कई ग्रामों में आर्यसमाज संस्था की स्थापना की, कई गुरुकुलों को अन्न-धन, संग्रह करने में भरसक सहयोग दिया। आपका जीवन चलता-फिरता आदर्श सुधारक था। आपने शांतिधर्मी मासिक पत्रिका का सुव्यवस्थित संचालन भी किया, आज 'शांतिधर्मी' एक अच्छी पत्रिका के रूप में सर्वत्र ख्याति प्राप्त है।

'कीर्तिर्यस्य स जीवति' के अनुसार आप आर्यजगत् के पवित्र कीर्ति-स्तम्भ थे। इसलिए आर्यजगत् आपको सदा स्मरण करता रहेगा।

आचार्य वचनपाल शास्त्री आर्य पुरोहित
शिव कालोनी, रादौर, जिला यमुनानगर-१३५१३३

हमने ऐसा प्रचारक नहीं देखा

हमें पं० श्री चन्द्रभान जी आर्य का शरीर पूरा होने की खबर मिलने पर बड़ा दु:ख हुआ। मैंने बचपन से ही पं० जी के बारे में बहुत कुछ सुना था। फिर हमें उनके कार्यक्रमों में शामिल होने का मौका मिला। और नजदीक से उनको देखा तो पाया कि वे एक स्पष्ट आर्य उपदेशक थे। उनके अन्दर महर्षि दयानन्द सरस्वती की विचारधारा कूट- कूट कर भरी हुई थी। हमने उनके जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि शांतिधर्मी मासिक पत्रिका में पाई है, जो उन्होंने शुरू की। इस पत्रिका के माध्यम से उन्होंने वेद प्रचार का काम घर-२ पहुंचाने का कार्य किया। उनकी पत्रिका में आध्यात्मिक विषय को पढ़कर हम बड़े प्रभावित हुए। उनकी पत्रिका के मुकाबले में हमने जो और पत्रिकायें पढ़ी, लेकिन हम उनकी पत्रिका से बड़े प्रभावित हुए। उनकी करनी और कथनी में कोई अन्तर नहीं था। वे सच्चे वेद प्रचारक, धर्म प्रेमी, देशभक्त और गौभक्त थे।

पं० श्री चन्द्रभान जी आर्य अपने जीवन में आर्थिक अभाव आने पर भी कभी सत्य का प्रचार करने के लिए कभी पीछे नहीं हटे। उन्होंने अपने समय में पैदल चलकर भूखे रह-रह कर, बिना लोभ-लालच के आर्य समाज का प्रचार किया। ऐसे प्रचारक हमें अपनी जिन्दगी में देखने को नही मिले। वेदप्रचार के साथ उन्होंने अपने परिवार को भी अच्छे संस्कार और उच्च कोटि की शिक्षा दी।

हम सहदेव आर्य जी से प्रार्थना करते हैं कि जो शान्तिधर्मी नामक पत्रिका का पौधा उन्होंने लगाया है,

हम करते हैं नमन शतवार

'अश्वत्थे वो निषदनम्'।। यजु०३५/४ के अनुसार कल न टिक पाने वाले इस अनित्य नाशवान् पार्थिव शरीर से पंच तत्वों में विलीन होकर वे दिव्यस्वरूप प्रभु के परमधाम को प्रस्थान कर गये। अन्य सब लोग भी उसी मार्ग पर चल रहे हैं, सबका गन्तव्य- सबकी अन्तगति वही है, पर खेद यही रहा है कि हम आपके अन्तिम दर्शनों से वंचित रहे-
आह! गुंलचो अज़ल से ऐसी नादानी हुई।
फूल वह तोड़ा चमन भर में वीरानी हुई।।

मेरे पास ११-०२-२०१५ को शांतिधर्मी आया।
उसी ने मुझे ये सन्देश सुनाया।
२३-१२-२०१४ को निश्चय करके जान।
श्री चन्द्रभानु का हुआ अस्त भान।।
हे आशुकवि! ज्ञानमार्ग दर्शक!
हे वाग्मी! सत्पथ प्रदर्शक।।
आर्यसमाज की शिक्षा के विस्तारक।
ऋषि दयानन्द के अनुयायी सुविचारक।।
शान्ति उपदेश, शांतिधर्मी के सम्पादक।
सत्प्रेरणा के उद्गम स्रोत श्रेष्ठ सुधारक!!
भरी हुंकार, पोपगढ़ विस्मारक।
अज्ञान अविद्या पाखण्ड के विध्वंसकारक!!
लेखक वक्ता सद्ज्ञान प्रसारक!
वेद-विद्या के प्रतिपादक।।
भव-भय-भ्रान्ति निवारक।
आर्य समाज के प्रचारक।।
हे सत्योपदेशक!
आर्य भजनोपदेशक!!
नत होकर बारम्बार
हम करते हैं नमन शतवार।।

आचार्य वचनपाल शास्त्री,
आर्य पुरोहित

उनको लगातार सींचते रहें और वेद प्रचार का काम घर-२ तक पहुँचाते रहें। इस काम के लिए हम आपके बड़े आभारी हैं। हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि इस दुःख की घड़ी में उनके पूरे परिवार को सान्त्वना दे और उस दिवंगत आत्मा को शांति देकर उस आत्मा को शरीर दे कर हमारे बीच में दोबारा वेद प्रचार के लिए भेजें। आज के समय में इस देश को उनकी बड़ी जरूरत है।

सुभाष आर्य बुडायन (९४६६६३१०७८)
मन्त्री, आर्यसमाज बुडायन, जिला जींद

राष्ट्र के सच्चे समर्पित तपोनिष्ठ विद्वान्

परम सम्माननीय श्री पं० चन्द्रभानु जी आर्य की संगीतमय वेद प्रचार शैली से प्रभावित हरियाणा ही नहीं अपितु उत्तरी भारत भी वंचित रहेगा, जिसे समाज कभी भी पूर्ण नहीं कर पायेगा। शांतिधर्मी के प्रधान-सम्पादक आर्य जगत् के दिग्गज भजनोपदेशक, ऋषि दयानन्द के सपनों को साकार करने वाले, निर्भयतापूर्वक समाज में वेद प्रचार करने वाले, राष्ट्र के सच्चे समर्पित तपोनिष्ठ विद्वान्, ओजस्वी, यशस्वी वक्ता, वैदिक धर्म के प्रामाणिक मर्मज्ञ पं० चन्द्रभानु जी आर्य ने २३ दिसम्बर २०१४ को भारत माता की गोद में पंचत्व शरीर त्याग दिया जो कि आर्यजगत् में गहन दुःख का विषय है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा शोकाकुल परिवार को धैर्यपूर्वक इस असहनीय दुःख को सहने का सामर्थ्य व शक्ति प्रदान करे। मैं दिवंगत आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

कर्णदेव शास्त्री, संस्कृत योग अध्यापक
डी० ए० वी० सी० सै० प० स्कूल, जीन्द

विशेष व्यक्तित्त्व के धनी

पं० चन्द्रभानु जी एक उच्च-कोटि के भजनोपदेशक एवं विशेष व्यक्तित्त्व के धनी थे। वे निम्न मध्य वर्ग के परिवार में पैदा हुए। आर्यजनों के सम्पर्क में आने के बाद वैदिक सिद्धान्तों के दीवाने हो गए। युवावस्था में ही गृहस्थ जीवन की परवाह न करते हुए वैदिक प्रचार में कूद पड़े। मेरा उनसे सम्पर्क १२ वर्ष की आयु में हुआ जब वे २४-२५ वर्ष की आयु में पूर्ण युवावस्था में थे। उनकी आवाज ओजस्वी थी। उनका प्रचार वैदिक सिद्धान्तों से ओतप्रोत था। मेरी किशोर अवस्था का आरम्भ था। उनकी पहली सभा से ही मैं उनके वैदिक सिद्धान्तों से ओत प्रोत भजनों से बहुत प्रभावित हुआ। हमारे गांव में वे प्रचार के लिए अकसर आते रहते थे। मैंने गांव में उनकी कोई सभा नहीं छोड़ी। उनके प्रचार ने मेरे जीवन को एक विशेष रास्ता दिखाया। मैंने उनसे निर्लेप ढंग से जीवन जीने की कला सीखी, जिससे समाज में सम्मानपूर्वक अपेन कर्तव्यों का पालन करते हुए परिवार, समाज एवं राष्ट्र की सेवा करते हुए जीने की कला से साक्षात्कार हुआ। पं० जी के उपदेशों से मेरे जैसे हजारों व्यक्तियों के जीवन में एक सकारात्मक शक्ति का संचार हुआ जिससे वे व्यसनमुक्त, अंधविश्वास मुक्त जीवन जीते हुए सफलतापूर्वक अपने पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्र व मानवता के प्रति कर्त्तव्यों का पालन कर रहे हैं।

पं० चन्द्रभान जी ने अपने जीवन में पारिवारिक तथा सामाजिक दायित्त्वों को अच्छी प्रकार निभाते हुए वैदिक प्रचार करते हुए समाज एवं राष्ट्र को उच्च कोटि की संतान दी। वे हमारे लिए आजीवन अविस्मरणीय बने रहेंगे।

जगरूप सिंह तंवर एडवोकेट, जींद

जैसे कोई प्रकाशपुंज विलुप्त हो गया

शांतिधर्मी की आत्मा, जान, आन, बान तथा शान, हर दिल अजीज, पिता तुल्य व्यक्तित्त्व के स्वामी, विद्वान् उपदेशक, भजनोपदेशक पं० चन्द्रभानु जी आर्य के आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर ऐसा लगा जैसे कोई प्रकाशपुंज विलुप्त हो गया हो। उनके द्वारा लिखित सम्पादकीय सदा शिक्षा देने वाले, ज्ञानवर्धक, समाज में अंधविश्वास तथा पाखण्डों को दूर करने वाले, समाजसुधार करने वाले, भारतीय संस्कृति, सभ्यता तथा परम्परा के ज्ञान का प्रचार करने वाले थे। ऐसे महापुरूष का हमारे बीच में न होना एक खाली जगह पैदा करता है, जिसे कभी भरा नहीं जा सकता। यदि हमें किसी माननीय बुजुर्ग का नेतृत्त्व, मार्गदर्शन तथा वात्सल्य मिलता रहे तो हम क्यों उसे छोड़ना चाहेंगे। लेकिन जैसा कि गीता में कहा है- 'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः' जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु भी निश्चित है। शांतिधर्मी के रूप में उनका लगाया यह साहित्यिक पौधा ऐसा वटवृक्ष बनेगा जो कि पं० चन्द्रभानु जी के रूप में सभी को सुखद ठण्डी छाया, आश्रय तथा संरक्षण देता रहेगा। उनके हमारे बीच में न रहने से बेशक पत्रिका के प्रकाशन का बोझ तथा जिम्मेवारी आप पर आ पड़ी है, जिसे निभाने में आप सक्षम, कुशल तथा सुयोग्य हैं, लेकिन एक बुजुर्ग विद्वान्, अनुभवी पिता, गुरु तथा व्यापक ज्ञानवान् मार्गदर्शक का अभाव सदा खलता रहेगा। हम सभी ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनके परिजनों, शिष्यों तथा आश्रितों को यह अपूरणीय दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

प्रो० शामलाल कौशल,
९७५-बी/२०, ग्रीन रोड रोहतक-१२४००१

सामयिक चिन्तन

महिला दिवस की आड़ में पश्चिमी पाखंड

❑डॉ० विवेक आर्य, शिशु रोग विशेषज्ञ
drvivekarya@yahoo.com

महिला दिवस पर अखबारों में महिला अधिकारों के विषय में लेख प्रकाशित हुए। लेकिन महिला अधिकारों की आड़ में महिलाओं को क्या सन्देश दिया जा रहा है, यह जानना आवश्यक है। 8 मार्च, 2015 के हिंदुस्तान टाइम्स में महिला दिवस के अवसर पर महिलाओं को आजादी के नाम पर कुछ अधिकार दिए जाने की वकालत की गई है। आप सोचिये कि इन अधिकारों से नारी जाति का उत्थान होगा या पतन? यह अधिकार है- उन्मुक्त सम्बन्ध बनाने का अधिकार, विवाह पूर्व शारीरिक सम्बन्ध बनाने का अधिकार, समलैंगिकता का अधिकार, शराब आदि नशा करने का अधिकार, पुरुषों से दोस्ती करने का अधिकार, कम से कम कपड़े पहनने का अधिकार, सन्नी लियॉन बनने का अधिकार, वेश्या बनने का अधिकार, अश्लील फिल्में देखने का, अनेक पुरुषों से सम्बन्ध बनाने का अधिकार, लिव इन रिलेशनशिप में रहने का अधिकार आदि। इस सब के साथ एक सन्देश यह भी दिया गया कि आज की नारी सती सावित्री नहीं है, न केवल एक आदमी के साथ वह अपना पूरा जीवन बिताने वाली है, उसे अपनी शारीरिक अथवा अन्य जरूरतों को पूरा करने के लिए किसी पर निर्भर होने की आवश्यकता नहीं है, उसे खुले में सांस लेने का पूरा अधिकार है। उसे चरित्रवान बनने की कोई जरूरत नहीं हैं।

अब पाठक दूसरे पक्ष को समझें। विकृत सोच का अन्धानुसरण करने वाले लोग जिन बातों को नारी का अधिकार बताकर प्रचारित कर रहे हैं, वह अधिकार नहीं अपितु घातक जहर है, जिसका सेवन करने वाला भोग की अंधी गलियों में सदा-सदा के लिए भटकता है। जब निर्भया जैसे कांड होते हैं तो आप उसका दोष फिल्मों आदि के द्वारा बढ़ावा दिए गए नंगपने से होने वाले मानसिक प्रदूषण को क्यों नहीं ठहराते? यह कहने में आपको शर्म क्यों आती है कि निर्भया कांड को अंजाम देने वाले बलात्कारी नियमित रूप से अश्लील फिल्में देखते थे, शराबी और मांसाहारी थे। जब कोई सदाचार की बात करता है, जो पुरुष और नारी दोनों के लिए समान रूप से अनिवार्य नियम है; तब आप उसे पुरानी, दकियानूसी, आज के जमाने के लिए नहीं- आदि कहकर खारिज करते हैं एवं भारतीय इतिहास में खजुराहो की मूर्तियों एवं कामसूत्र के रूप में उसके उदाहरण होने का बहाना बनाते हैं। स्पष्ट रूप से अश्लीलता फैलाने के आप भी दोषी हैं क्योंकि आप सदाचार का सन्देश देने वाली शिक्षा के स्थान पर व्यभिचार को महिमामण्डित करते हैं। एक ओर व्यभिचार को बढ़ावा देना; दूसरी ओर उससे होने वाले निर्भया जैसे कांड पर छाती पीट-पीट कर रोना और अंत में इस सब पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर फिल्म बनाकर पश्चिमी देशों में इस देश की छवि खराब करना आपकी विकृत सोच को प्रकट करता है।

नारी के अधिकारों को जानना है तो वेदों से जानो। वेद में नारी का स्वर है- 'मेरे पुत्र शत्रुहन्ता हों और पुत्री तेजस्विनी हों' (ऋ.10/159/3) वेद कहता है- 'राष्ट्र में विजयशील सभ्य वीर युवक पैदा हों व बुद्धिमती नारियाँ उत्पन्न हों। (यजु 22/22) वेदों में पत्नी को उषा के समान प्रकाशवती, वीरांगना, वीर प्रसविनी, विद्यालंकृता, स्नेहमयी माँ, पतिव्रता, अन्नपूर्णा, सदगृहिणी, सम्राज्ञी आदि बताया गया है, जो निश्चित रूप से नारी जाति का उचित सम्मान है। वेदों में दहेज शब्द का सही अर्थ बताया गया है। दहेज गुणों का नाम है और वेद कहते हैं कि पिता ज्ञान, विद्या, उत्तम संस्कार आदि गुणों के साथ वधु को वर को दे। वेदादि शास्त्रों में नारी को पुरुष से बढ़ कर अधिकार दिया गया है। मनुस्मृति कहती है- 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया: ।।' अर्थात् जिस कुल में नारियों की पूजा, अर्थात् सत्कार होता है, उस कुल में दिव्यगुण, दिव्य भोग और उत्तम संतान होते हैं, और जिस कुल में स्त्रियों की पूजा नहीं होती, वहाँ जानो उनकी सब क्रिया निष्फल हैं। नारी के अधिकारों की गरिमा उसके उच्च विचार एवं महान गुणों से सुशोभित होने में है, न कि व्यभिचारी बनने में।

महिला दिवस पर समाज को व्यभिचार का नहीं सदाचार का सन्देश देना चाहिए। नारी का सम्मान तभी होगा जब विचारों में पवित्रता होगी एवं सदाचारी जीवन होगा। निर्भया को सच्ची श्रद्धांजलि देनी है तो समाज को सदाचारी बनाना होगा, जिससे हर नारी अपने आपको सुरक्षित समझे एवं हर पुरुष नारी को सम्मान की दृष्टि से देखे। वस्तुत: तो यह दिवस आदि बनाना भी पश्चिमी पाखंड ही है। हमारे यहाँ तो माता की पूजा नित्य कर्तव्य है।

सब मनुष्यों का एक ही धर्म

❑**आचार्य प्रियव्रत जी वेद वाचस्पति** भूतपूर्व कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय, हरिद्वार

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। पाँच हजार वर्ष पूर्व तक वेद मत से भिन्न कोई दूसरा मत नहीं था। आज सारा संसार धर्म के नाम पर लड़ रहा है। क्या सब मनुष्यों का 'एक ही धर्म' होना संभव है? क्या महर्षि दयानन्द की यह परिकल्पना असंभव है कि परमात्मा एक मत में प्रवृत्त होने का उत्साह सब मनुष्यों के आत्माओं में प्रकाशित करे!-- लेख पुराना अवश्य है, पर अधिकारी विद्वान् का विचार नित्यनूतन है। -सं०

जब परमात्मा ने सृष्टि के आरंभ में मनुष्य को उत्पन्न करके उसे आंखें दी थीं, उसी समय उसकी आंखों को सहायता देने के लिए सूर्य का प्रकाश भी दे दिया था। मनुष्य आंखें खोलकर चले और सूर्य के प्रकाश से सहायता ले तो उसे पता लगता रहेगा कि झाड़ों-झंखाड़ों, कांटे-कंटीलों ईंट-पत्थर, गड्ढे-टीलों आदि से रहित, साफ-सुथरा और अपने गंतव्य स्थान तक पहुंचने का सीधा मार्ग कौन सा है। इसी भाँति हमारी मन की, बुद्धि की आंखों की सहायता देने के लिए प्रभु ने सृष्टि के आरंभ में ही वेद रूपी सूर्य के ज्ञान का प्रकाश भी दे दिया था। हम मन से, बुद्धि से, विचारपूर्वक वेद का अध्ययन करें और वहाँ से जो ज्ञान प्राप्त हो उसें भली-भाँति समझ लें तो हमें पता चलता रहेगा कि हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है, हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। वेद से प्राप्त इस ज्ञान के अनुसार आचरण यदि हम करने लग जाएं तो हमारा जीवन सभी दृष्टियों से पूर्ण सफल बन जाएगा। वेद का यह उपदेश किसी विशेष देश और किसी विशेष जाति के लिए नहीं है। यह उपदेश प्रभु ने धरती पर रहने वाले सभी मनुष्यों और सभी जातियों के लिए दिया है, जिससे मानवमात्र अपने जीवन को सब प्रकार की सुख समृद्धि से भरपूर बना सके। इस प्रकार वेद के उपदेश, वेद का धर्म सार्वभौम है।

वेद का धर्म सबके लिये:-

वेद में प्रभु ने स्वयं कहा है कि मैं वेद की इस कल्याणकारिणी वाणी को सब मनुष्यों को उनके कल्याण के लिए दे रहा हूँ। (यजु० २६/२) एक दूसरे स्थान पर वेद इसी सम्बन्ध में कहता है कि 'हे मनुष्यो, मैंने माता की भाँति कल्याण करने वाले वेद को तुम्हारे लिए प्रस्तुत कर दिया है, वेद का यह ज्ञान मनुष्य को उद्यमशील बना देता है; और उसके हृदय व मन को पवित्र कर देता है, इसके ज्ञान से तुम्हें लम्बी आयु प्राप्त होगी, बलिष्ठ प्राण-शक्ति प्राप्त होगी, गौ आदि उपयोगी पशु प्राप्त होंगे, कीर्ति प्राप्त होगी, धन-सम्पत्ति प्राप्त होगी, ब्रह्मतेज प्राप्त होगा और अन्त में ब्रह्मलोक अर्थात् मोक्ष प्राप्त होगा, जिससे तुम ब्रह्मानन्द रस का पान कर सकोगे। (अथर्व १९-७१-१)

वेद के इन और ऐसे ही अन्य स्थलों से अत्यन्त स्पष्ट है कि वेद का धर्म मानवमात्र के लिए दिया गया सार्वभौम धर्म है। हम वेद के प्रचारकों की भी यही मान्यता है। हम मानव मात्र के कल्याण को लक्ष्य में रखकर वेद का धरती भर में प्रचार करना चाहते हैं। वेद के उपदेश व्यक्ति और समाज में मनुष्य के लिए कितने हितकारी हैं और उसे कितना ऊँचा उठाने वाले हैं, इसे दिखाने के लिए हम यहाँ वेद की कुछ शिक्षाओं की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं।

सब मनुष्य भाई-भाई

वेद कहता है कि 'ईश्वर हम सब मनुष्यों का माता और पिता है' (ऋ० ८-९८-११) और 'हम उस अमर परमात्मा के पुत्र हैं' (ऋ० १०-१३-१) इसका स्पष्ट भाव यह है कि हम धरती के सब मनुष्य आपस में भाई-भाई हैं। हम सबको एक दूसरे को आपस में भाई की दृष्टि से देखना चाहिए तथा जिस प्रकार एक माता से उत्पन्न भाई एक दूसरे की सहायता करने और एक दूसरे का कष्ट दूर करने के लिए सदा तत्पर रहते हैं उसी प्रकार हम सब परमात्मा के पुत्रों को भी एक दूसरे ही सहायता करने और एक दूसरे का कष्ट दूर करने के लिए तत्पर रहना चाहिए। किसी मनुष्य को किसी दूसरे मनुष्य की किसी प्रकार की हानि नहीं करनी चाहिए और उसे किसी प्रकार का कष्ट नहीं देना चाहिए, प्रत्युत उसके कष्ट दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। यहाँ तक कि पशु-पक्षियों को भी कष्ट नहीं देना चाहिए, वे भी परमात्मा के पुत्र हैं और हमारे भाई ही हैं।

सभी प्राणी हमारे मित्र:

वेद का उपदेश है कि 'हमें प्राणी मात्र को मित्र की दृष्टि से देखना चाहिए और ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि

सभी प्राणी हमें मित्र की दृष्टि से देखें, सभी को आपस में एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखना चाहिए। (यजु० ३६/१८) मित्र का शब्दार्थ स्नेह करने वाला होता है। इसका एक अर्थ मृत्यु से, विनाश से, रक्षा करने वाला भी होता है। मित्र आपस में एक दूसरे से स्नेह किया करते हैं और एक दूसरे की विनाश से तथा सभी प्रकार की हानियों से रक्षा किया करते हैं। हमें प्राणी मात्र को अपना मित्र समझ कर उनसे स्नेह करना चाहिए और स्नेही मित्र जिस तरह एक दूसरे का हित किया करते हैं उसी प्रकार प्राणी मात्र का हित करने में हमें तत्पर रहना चाहिए। जैसे स्नेही मित्र एक दूसरे की विनाश से रक्षा किया करते हैं, उसी प्रकार हमें देखना चाहिए कि कोई प्राणी अपनी किसी गलती के कारण विनाश को न प्राप्त हो जाये, कोई हानि न उठा ले। हमें उसकी भूल सुधारने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए। हमें अपनी ओर से तो किसी के विनाश में और किसी की हानि करने में प्रवृत्त होना ही नहीं चाहिए।

> वेद का यह उपदेश किसी विशेष देश और किसी विशेष जाति के लिए नहीं है। यह उपदेश प्रभु ने धरती पर रहने वाले सभी मनुष्यों और सभी जातियों के लिए दिया है, जिससे मानवमात्र अपने जीवन को सब प्रकार की सुख समृद्धि से भरपूर बना सके।

निःस्वार्थ स्नेह से विश्व की एकताः-

हमें आपस में एक दूसरे को कितने गहरे प्रेम से देखना चाहिए, इस सम्बन्ध में वेद के द्वारा परमात्मा आदेश देते हैं कि 'हे मनुष्यों, तुम सब अपने हृदय एक बनाकर रखो, अपने मन एक बना कर रखो, तुम आपस में द्वेष मत करो, तुम सब आपस में एक दूसरे को इस प्रकार प्रेम से चाहो जिस प्रकार कि एक गौ अपने ताजे पैदा हुए बछड़े को चाहा करती है' (अथर्व० ३-३०-१) प्रेम की प्रगाढ़ता को दिखाने के लिए वेद ने बछड़े और गौ की इस उपमा में कमाल कर दिया है। मनुष्य माता के अपने पुत्र के प्रति प्रेम में तो फिर भी कुछ स्वार्थ छिपा रहता है कि यह कभी आगे भविष्य में मेरी सेवा करेगा और मुझे सुख देगा, परन्तु गौ में अपने ताजे पैदा हुये बछड़े के प्रति प्रेम में इस प्रकार का तनिक सा भी स्वार्थ छिपा नहीं होता। आगे चलकर कुछ अरसे के बाद तो ये एक दूसरे को कतई भूल जाते हैं। उन्हें यह भी बिल्कुल स्मरण नहीं रहता कि यह मेरा पुत्र और यह मेरी माता है। गौ का बछड़े के प्रति निःस्वार्थ प्रेम रहता है। हम सब मनुष्यों में, चाहे हम किसी राष्ट्र के निवासी हों और चाहे सारी धरती के निवासी हों, आपस में इतना गहरा प्रेम रहना चाहिए कि जितना गौ का ताजे उत्पन्न हुए अपने बछड़े के प्रति होता है। इतने गहरे प्रेम में भरकर एक दूसरे का हित साधन करना चाहिए। तभी राष्ट्रों व धरती के सब निवासी भरपूर उन्नति कर सकेंगे और अपने प्रदेशों और घरों को सुख का धाम बना सकेंगे।

कोई बड़ा या छोटा नहींः-

वेद मनुष्यों में परस्पर के व्यवहार में ऊंच-नीच के विचार और बर्ताव को स्वीकार नहीं करता। वेद आपस के व्यवहार में पूर्ण समानता और सम्मान के आचरण का उपदेश करता है। वेद में कहा गया है कि मनुष्यों में कोई बड़ा और कोई छोटा नहीं है, सब आपस में भाई हैं, सबको मिलकर अपने राष्ट्र और समाज के सौभाग्य की वृद्धि करनी चाहिए, परमात्मा सब का पिता है और पृथ्वी सबकी माता है, ऐसा जानकर सब भाई-भाई की भाँति मिलकर काम करेंगे तो धरती माता सबके लिए भाँति-भाँति के ऐश्वर्य और भोग प्रदान करेगी तथा सबके जीवन के दिन सुदिन बने रहेंगे। (ऋ० ५-६०-५) यदि वेद की इस शिक्षा पर किसी देश के सब लोग आचरण करने लग जाएँ तो उनका कितना कल्याण हो सकता है।

सबकी उन्नति में अपनी उन्नतिः-

मनुष्य समाज की सर्वतोमुखी उन्नति और सुख समृद्धि के लिए वेद में स्थान-स्थान पर अत्यन्त महत्वपूर्ण उपदेश दिये गये हैं। एक स्थान पर कहा है कि 'हे मनुष्यो, तुम एक दूसरे के लिए सुन्दर मीठी वाणी बोलो।' एक अन्य स्थान पर कहा है कि- 'मनुष्यों, तुम्हारे पानी पीने के स्थान समान हों, तुम्हारा अन्न का सेवन समान हो, तुम स्नेह के बन्धन में समान रूप से बन्ध कर रहो, मिलकर ज्ञान स्वरूप परमेश्वर की उपासना करो और मिलकर अपने यज्ञ किया करो, तुम सब इस प्रकार मिलकर रहो जैसे कि रथ चक्र की नाभि के चारों ओर उसके अरे मिले हुये रहते हैं। (अथर्व० ३-३०-६) एक दूसरे स्थल पर वेद कहता है कि 'सब प्रकार के ऐश्वर्य के अभिलाषी हे मनुष्यो, तुम सब परस्पर मिलकर रहो, मिलकर चलो, प्रेम से मिलकर बातचीत करो। तुम्हारे मन मिलकर परस्पर सहयोग से ज्ञान प्राप्त करें। जिस प्रकार कि तुम से पहले के विद्वान् पुरुष मिलकर परस्पर सहयोग से विविध प्रकार का ज्ञान प्राप्त करते हुये अपने लिए ऐश्वर्य और अभ्युदय के अपने अपने भाग को प्राप्त करते रहे हैं।' 'ऐश्वर्य के अभिलाषी तुम सबका गुप्त और गंभीर विषयों की मन्त्रणा करने, विचार करने का स्थान समान हो, जिसमें तुम समान रूप से जा सको, तुम्हारी राज्य सभाएं और दूसरी सभाएं समान हों, जिनके सदस्य सब बन सकें, तुम्हारा मन समान हो जिसमें परस्पर के लिए प्रेम हो, तुम्हारा मन से प्राप्त किया जाने वाला ज्ञान भी एक साथ हो अर्थात् परस्पर के सहयोग से प्राप्त किया

जावे। तुम सबको समान रूप से मिलकर की जाने वाली मन्त्रणा और विचार की मैं परमेश्वर मन्त्रणा देता हूँ, सलाह देता हूँ, तुम सबको समान रूप से परस्पर के लिए किये जाने वाले त्याग के द्वारा ऐश्वर्य और अभ्युदय प्राप्ति के यज्ञ में नियुक्त करता हूँ। तुम सबके संकल्प समान हों, तुम्हारे हृदय एक समान हों, तुम्हारा मन एक समान हो, जिससे तुम्हारा भली भाँति परस्पर मिलकर साथ रहने से होने वाला ऐश्वर्य और अभ्युदय हो सके। (ऋ० १०/१९१/ १-४) वेद के इन उपदेशों के अनुसार धरती के मानव यदि चलने लग पड़े तो कौन सा ऐसा राष्ट्र होगा जिसके निवासी सब प्रकार की उन्नति, ऐश्वर्य और अभ्युदय तथा सब प्रकार की सुख समृद्धि के सर्वोच्च शिखर पर नहीं जा चढ़ेंगे।

> वेद की कोई भी शिक्षा अव्यावहारिक नहीं है। वेद का धर्म सार्वभौम और व्यावहारिक धर्म है। जब विश्व में सर्वत्र इस धर्म का प्रचार हो जायेगा और सब लोग इसके अनुसार जीवन बिताने लगेंगे तभी धरती पर सच्चे सुख और सच्ची शांति का साम्राज्य स्थापित हो सकेगा।

सुखी और समृद्ध घर-परिवारः-

हम सभी मनुष्यों को जीवन का एक बड़ा भाग विवाहित होकर गृहस्थाश्रम में कुटुम्ब के रूप में रहकर बिताना पड़ता है। हमें गृहस्थ होकर कुटुम्ब का अपना जीवन किस प्रकार बिताना चाहिए- इस सम्बन्ध में भी वेद में बड़े मार्मिक उपदेश दिये गये हैं। वहाँ कहा गया है कि भाई भाई से द्वेष न करे, बहिन-बहिन से द्वेष न करें, घर के सब निवासी मिलकर चलने वाले बनो, कर्मों और नियमों का समान रूप से पालन करो और एक दूसरे के साथ मंगल कारक भद्रवाणी बोलो। (अथर्व० ३-३०-३)। पुत्र पिता का अनुव्रत हो अर्थात् उसके अनुकूल कर्म करने वाला हो, माता के साथ एक मन वाला हो, पत्नी पति के लिए मधुरता युक्त मीठी और सुख शांति देने वाली वाणी को बोले। (अथर्व० ३-३०-२) अथर्ववेद के चौदहवें काण्ड के प्रथम और द्वितीय सूक्त में तथा ऋग्वेद के दसवें मण्डल के ८५ वें में विवाह और गृहस्थ जीवन के सम्बन्ध में बड़े विस्तृत रूप में चर्चा की गई है और गृहस्थ जीवन को सुख का धाम बनाने के लिए बड़े महत्व के उपदेश दिये गये हैं। स्त्रियों की बहुत ऊंची तथा आदरणीय स्थिति रखी गयी है। उन सूक्तों के सारे उपदशों और विचारों को इस लघु लेख में दे सकना संभव नहीं है। अन्य अनेक स्थलों में भी गृहस्थी जीवन के सम्बन्ध में वेद में बड़े महत्वपूर्ण उपदेश दिये गये हैं। स्थाली पुलाक न्याय से गृहस्थ जीवन के विषय में वहाँ से दो बातें ही यहाँ लिखी जा रही हैं।

नारियों का स्थानः-

वहाँ कहा है कि स्त्रियाँ कभी किसी प्रकार के कष्ट के कारण रोने नहीं पावें। उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखा जाए जिससे वे निरोग रहें तथा उन्हें पहनने के लिए भाँति-भाँति के रत्न दिए जाएं। (अथर्व० १२- २-३१) गृहपत्नी को घर के सब लोगों को अपने वश में रखना चाहिए। (अथर्व० १४-१-२०)। गृह पत्नी को घर के सब लोगों पर राज्य करने वाली साम्राज्ञी होना चाहिए। श्वसुर पर, देवरों पर, ननदों पर और सासों पर राज्य करने वाली साम्राज्ञी होना चाहिए। (अथर्व० १४-१-४४) गृह पत्नी को अपने घर का मंगल करने वाली और उसे बढ़ाने वाली होना चाहिए, वह पति को सुख देने वाली और सास को सुख देने वाली हो, (अथर्व० १६-२-२६)। पति-पत्नी को सदा हँसते-खेलते रहकर हर्ष में रहना चाहिए तथा सुन्दर घरों में रहकर सुन्दर सन्तानें उत्पन्न करनी चाहिएँ। (अथर्व १४-२-४३) पति पत्नी को कभी एक दूसरे से वियुक्त नहीं होना चाहिए। सारी आयु एक साथ रहकर भोगनी चाहिए। (अथर्व० १४- १-२२) (ऋ० १०-८५-४२) पति पत्नी चकवे और चकवी की तरह सदा इकट्ठे रहें और उन्हें एक साथ रहकर सारी आयु भोगनी चाहिए। (अथर्व० १४-२-६४) अर्थात् उनमें तलाक कभी नहीं होना चाहिए। विवाहित पति-पत्नी और घर के अन्य सब लोग यदि इन पंक्तियों में उद्धृत वेद के उपदेशों तथा इसी प्रकार के अन्य स्थलों में दिये उपदेशों के अनुसार अपना जीवन बिताते रहें तो सचमुच धरती के सब लोगों के गृहस्थ जीवन स्वर्गधाम बन सकते हैं।

शिक्षा से अभ्युदयः-

मानव की सारी उन्नति, ऐश्वर्य, अभ्युदय और सुख समृद्धि का मूल आधार उसकी शिक्षा है, उसे शिक्षा काल में जैसी शिक्षा दी जायेगी वह वैसा ही बन जायेगा। वह अपनी शिक्षा के अनुसार ही कार्य करेगा। यदि उसकी शिक्षा अच्छी है तो वह अच्छा बन जायेगा और अपने संसार को अच्छा बना लेगा और यदि उसकी शिक्षा बुरी है तो वह बुरा बन जायेगा तथा अपने संसार को भी बुरा बना लेगा। वेद में बालकों की शिक्षा का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। अथर्ववेद के ११वें काण्ड का पांचवाँ सूक्त बड़े-बड़े मन्त्रों का सूक्त है। इस सूक्त को ब्रह्मचर्य-सूक्त कहा जाता है। इसमें बालकों की शिक्षा का ही वर्णन है। वेद के अन्य अनेक स्थलों में बालकों की शिक्षा के सम्बन्ध में निर्देश दिये गये हैं। वेद में विद्यार्थी को ब्रह्मचारी कहते हैं और विद्यार्थी काल को ब्रह्मचर्याश्रम। प्रत्येक बालक के लिए कम से कम

२५ वर्ष की आयु तक और बालिका के लिए कम से कम १६ वर्ष की आयु तक ब्रह्मचर्याश्रम में रहना आवश्यक है। इस अवधि में कोई बालक विवाह नहीं कर सकेगा। वह पूर्ण संयम का जीवन व्यतीत करेगा तथा भाँति-भाँति के विद्या-विज्ञानों का अध्ययन करेगा। उसे भौतिक विज्ञान भी पढ़ाये जायेंगे तथा आध्यात्मिक विद्या भी पढ़ाई जायेगी। यम-नियमों और प्राणायाम आदि का अभ्यास कराके उसे योग की साधना भी कराई जायेगी। वेदादि शास्त्रों का भी अध्ययन उसे कराया जायेगा। इस सारी शिक्षा का परिणाम यह होगा कि जहाँ उसका विविध विषयों का ज्ञान बहुत ऊँची कोटि का हो जायेगा वहाँ उसके व्यावहारिक जीवन में पवित्रता आ जायेगी और वह वेद की उन ऊँची सामाजिक शिक्षाओं को भी जीवन में ढालने वाला बन जायेगा जिनका कुछ थोड़ा सा उल्लेख ऊपर किया गया है। किसी भी राष्ट्र के बालकों को उनके विद्यार्थी काल में यदि इस प्रकार की शिक्षा दी जाने की व्यवस्था हो जाये तो उसके निवासियों का नैतिक जीवन कितना ऊँचा हो जायेगा और वह भौतिक ऐश्वर्य और अभ्युदय के किस ऊँचे शिखर पर पहुँच जायेगा इसकी भली-भाँति कल्पना की जा सकती है।

मूलभूत आवश्यकताएँ : कोई वंचित न रहे:-

प्रत्येक मनुष्य की पाँच प्रधान आवश्यकताएं हैं= १-घर २-भोजन ३-वस्त्र ४-चिकित्सा ५-शिक्षा। प्रत्येक व्यक्ति को रहने के लिए अच्छा हवादार और रोशनीदार खुला मकान मिलना चाहिए। उसे स्वास्थ्यवर्धक पौष्टिक भोजन खाने को मिलना चाहिए। उसे सर्दी-गर्मी से बचाव के लिए ऋतुओं के अनुकूल वस्त्र पहनने को मिलने चाहिएँ। रोगी हो जाने पर अच्छी से अच्छी चिकित्सा उसे मिल सकनी चाहिए और ऊँची से ऊँची शिक्षा मिल सकनी चाहिए। वेद में स्थान-स्थान पर मनुष्य की इन पाँच मूलभूत प्रधान आवश्यकताओं की पूर्ति के सम्बन्ध में उपदेश दिये गये हैं। वेद के अन्न सूक्तों और कृषि सूक्तों, उसके शाला (घर) सूक्तों, उसके वस्त्रों सम्बन्धी प्रकरणों, उसके आयुर्वेद विषयक सूक्तों तथा उसके शिक्षा विषयक सूक्तों और प्रकरणों में मनुष्य मात्र की इन पांचों आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विस्तृत उपदेश दिये गये हैं। वेद के सभी प्रकरण ध्यान से पढ़ने योग्य हैं। यदि वेद के इन उपदेशों के अनुसार आचरण होने लगे तो धरती का कोई भी निवासी अपनी इन पाँचों आवश्यकताओं से वंचित नहीं रह सकता।

अज्ञान अन्याय अभाव का उपाय:-

मनुष्य की इन आवश्यकताओं की पूर्ति में बाधक तीन कारण होते हैं= १- अभाव २-अज्ञान और ३-अन्याय। यदि राष्ट्र में इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक सामग्री का अभाव है तो उसके निवासियों की ये आवश्यकतायें पूरी नहीं हो सकती। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक सामग्री उत्पन्न करने का ज्ञान यदि राष्ट्रवासियों को नहीं है, अथवा उत्पन्न सामग्री का सदुपयोग करने का ज्ञान उन्हें नहीं है, तो भी उनकी ये आवश्यकतायें पूरी नहीं हो सकतीं। और यदि इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक सामग्री तो राष्ट्र में पर्याप्त उत्पन्न होती है, परन्तु कुछ अन्यायी और अत्याचारी लोग इस सामग्री को जनता तक पहुँचने नहीं देते अथवा उसे लोगों से छीन लेते हैं तो भी जनता की ये आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो सकतीं। अभाव, अज्ञान और अन्याय इन तीनों को राष्ट्र से दूर करने के उपाय भी वैदिक धर्म बताता है। वेद के पुरुष सूक्तों (ऋ० १०-९० यजु० ३१ अथर्व० १९-६) और अन्य विभिन्न स्थलों पर वेद में वर्णाश्रम व्यवस्था का उपदेश किया गया है। समाज के व्यक्तियों को उनके गुण कर्मों के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों में विभक्त किया जाए और प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास, इन चार आश्रमों में विभक्त किया जाये। वर्णाश्रम व्यवस्था गुण-कर्म पर आधारित है, जन्म पर नहीं। ब्राह्मण वे लोग होंगे जो विभिन्न प्रकार के ज्ञान-विज्ञानों का आविष्कार और प्रचार करेंगे। जो सत्य की खोज और प्रचार में ही अपना जीवन समर्पित कर देंगे और इस प्रकार राष्ट्र में से भाँति-भाँति के अज्ञानों को दूर करने का व्रत ले लेंगे। क्षत्रिय वे लोग होंगे जो राज्य प्रबन्ध का काम सम्भाल कर जनता में किसी को किसी पर अन्याय नहीं करने देंगे और इस प्रकार राष्ट्र में से अन्याय को मिटाने का व्रत ले लेंगे। वैश्व वे लोग होंगे जो पशु-पालन खेती और भाँति-भाँति के उद्योग धन्धों के द्वारा भाँति-भाँति की उपभोग सामग्री को उत्पन्न करेंगे और व्यापार द्वारा उसे सर्व-साधारण जनता तक पहुंचाने का काम करेंगे और इस प्रकार राष्ट्र में से उपभोग सामग्री के अभाव को दूर करने का व्रत ले लेंगे। शूद्र वे लोग होंगे जो पढ़ाने लिखाने का पूरा अवसर देने पर भी कोई भी बुद्धि से करने का काम नहीं सीख सकेंगे। ये लोग टोकरी ढ़ोने आदि शारीरिक श्रम के काम ही कर सकेंगे। ये लोग शेष तीन वर्णों की सेवा करके उन्हें अपना काम करने का अधिक अवसर देकर उनकी सेवा द्वारा राष्ट्र की सेवा करेंगे और इस सेवा को ही अपना व्रत बना लेंगे।

चार आश्रम : राष्ट्र-सेवा के व्रत:-

ब्रह्मचर्याश्रम में राष्ट्र का प्रत्येक बालक भाँति-भाँति के विद्या-विज्ञानों को सीखेगा और अपनी रूचि व योग्यता

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

वैदिक विज्ञान के मिथुन

Pairs of Vedic Science

❑कृपाल सिंह वर्मा
२५३, शिवलोक, कंकरखेडा, मेरठ
मो० -९९२७८८७७८८

माता-पिता के जोड़े को मिथुन कहते हैं। यही प्राणीवर्ग के क्रम को बनाये रखता है। इसके ही कारण सन्ततिक्रम चलता रहता है। प्रकृति की दिव्य शक्तियाँ भी जोड़े के रूप में पायी जाती हैं। इनके मिथुन रूप के कारण ही सृष्टि चल रही है तथा चलती रहेगी।

ये मिथुन प्रमुख रूप से निम्नलिखित हैं-

(१) अश्विनौ (ध्वनि उत्पन्न करने के कारक)
(२) मित्र-वरुण (Positive व Negative Charge)
(३) द्यावा-पृथिवी (Energy-Matter) (४) सूर्य-चन्द्र
(५) प्राण-अपान (६) शीतता-उष्णता (७) अंधकार-प्रकाश
(८) अग्नि-सोम (९) दिन-रात (१०) उत्तरायण-दक्षिणायन आदि

वैदिक विज्ञान ने संसार में पाये जाने वाले सभी पदार्थों को पांच भागों में विभक्त कर दिया है। जो सूक्ष्म से स्थूल के क्रम में इस प्रकार हैं -

(१) आकाश (२) वायु (३) तेज (४) आप (५) पृथिवी।

आकाश का गुण शब्द (ध्वनि) है तथा शब्द का ज्ञान केवल श्रोत्र द्वारा होता है। वायु का गुण स्पर्श है तथा स्पर्श का ज्ञान त्वचा द्वारा होता है। तेज का गुण रूप है तथा रूप का ज्ञान चक्षु द्वारा होता है। आपः का गुण रस है तथा रस का ज्ञान रसना द्वारा होता है। पृथिवी तत्व का गुण गंध है तथा गन्ध का ज्ञान नासिका द्वारा होता है। इस प्रकार वैदिक विज्ञान में पदार्थों का वर्गीकरण ज्ञानेन्द्रियों के आधार पर किया गया है।

प्रत्येक स्थूल पदार्थ में अपने से सूक्ष्म पदार्थों के गुण अतिरिक्त रूप से पाये जाते हैं। सूक्ष्म तत्वों से ही स्थूल तत्वों का निर्माण होता है।

(१) सबसे सूक्ष्म पदार्थ होने के कारण आकाश में केवल अपना एक गुण 'शब्द' पाया जाता है।

(२) वायु में अपने गुण 'स्पर्श' के अतिरिक्त आकाश का शब्द गुण भी पाया जाता है।

(३) तेज तत्त्व में अपने गुण 'रूप' के अतिरिक्त आकाश का शब्द तथा वायु का स्पर्श गुण भी पाया जाता है।

(४) आपः तत्व में अपने गुण 'रस' के अतिरिक्त तेज का रूप, वायु का स्पर्श तथा आकाश का शब्द गुण भी पाया जाता है।

(५) पृथिवी तत्व में अपने गुण 'गंध' के अतिरिक्त जल का रस, तेज का रूप, वायु का स्पर्श तथा आकाश का शब्द गुण भी पाया जाता है।

इस बात को इस चार्ट से भी समझ सकते हैं।

	पदार्थ	**गुण**
(१)	आकाश	शब्द (ध्वनि)
(२)	वायु	स्पर्श, शब्द
(३)	तेज	रूप, स्पर्श, शब्द
(४)	आपः	रस, रूप, स्पर्श, शब्द
(५)	पृथिवी	गंध, रस, रूप, स्पर्श, शब्द

इस प्रकार वैदिक विज्ञान में पदार्थों का वर्गीकरण पूर्ण रूप से वैज्ञानिक है। आइंसटीन ने कहा कि भविष्य में Matter (मैटर) तथा Energy (एनर्जी) का भेद समाप्त हो जायेगा, तो फिर किसे Matter कहेंगे तथा किसे energy? ऐसा संकट वैदिक विज्ञान में कभी नहीं आयेगा। तथा यह भी है कि -

Matter=आपः (गंधहीन पदार्थ)+पृथिवी (गन्धयुक्त पदार्थ)

Energy= तेज (Light)+ वायु (Heat & Electricity)

अब वैदिक विज्ञान में पाये जाने मिथुनों पर विचार करते हैं।

१- अश्विनौ :- वैशेषिक दर्शन में महर्षि कणाद ने तर्क सहित सिद्ध किया है कि शब्द आकाश का गुण है, जिस प्रकार पानी में तरंगें चलती हैं उसी प्रकार आकाश में स्थित परमाणुओं में शब्द तरंगें चलती हैं। शब्द वहन करने वाले कारक को अश्विनौ कहते हैं। इन शब्द तरंगों की दो स्थितियाँ हैं। शब्द तरंग में एक उच्चतम तथा एक निम्नतम बिन्दु होता है। तरंग कम्पन्न इन दो बिन्दुओं के मध्य में ही होते हैं। ये असमान कम्पन्न अनेक होते हैं। असमान कम्पन्न मिलकर ही ध्वनि का निर्माण करते हैं। इस प्रकार आकाश तत्त्व का गुण है शब्द तथा शब्द को वहन करने वाला कारक है अश्विनौ।

२- मित्र-वरुण : आकाश से स्थूल तत्त्व वायु है। वायु अणुओं की गतिशीलता के कारण ही स्पर्श का आभास

होता है। इस गतिशीलता के कारण ही वायु को प्राण कहते हैं; जब वायु किसी रासायनिक अथवा भौतिक क्रिया से प्रकट होती है तो इसके दो रुप हो जाते हैं-

१ मित्र (Positive Charge)

२ वरुण (Negative Charge)

(अगस्त्य संहिता के चार श्लोकों से यह बात सिद्ध हो गयी है) जब हवा शरीर रुपी पिंड में प्रवेश करती है तो इसकी दो गति हो जाती हैं- १- शरीर के अन्दर जाना २- शरीर के बाहर आना। वैदिक विज्ञान में उष्मा (Heat) को भी वायु तत्त्व के अन्तर्गत माना गया है। तापक्रम घटने की स्थिति को मित्र तथा तापक्रम बढ़ने की स्थिति को वरुण कहते हैं। या हमारे शरीर के कम तापक्रम को मित्र तथा अधिक तापक्रम को वरुण कहते हैं। इस मित्र तथा वरुण के जोड़े के कारण ही संसार चल रहा है। तापक्रम घटता चला जाये अथवा बढ़ता चला जाए, दोनों स्थितियाँ जीवन को नष्ट करने वाली हैं। मित्र-वरुण को वर्षा का देवता भी कहते हैं, क्योंकि वरुण (उच्च ताप) पानी को आकाश में ले जाता है तथा मित्र भाप को शीतल कर पानी बरसाता है।

प्राण-अपान : वायु परमाणुओं की क्रियाशीलता बढ़ने की दशा को प्राण तथा क्रियाशीलता घटने की दशा को अपान कहते हैं। सूर्य की किरणें पृथ्वी पर पायी जाने वाली हर वस्तु में प्राण का संचार करती हैं। गतिशीलता का एकमात्र कारण प्राण है। वायु कणों की क्रियाशीलता से Heat तथा अन्यन्त क्रियाशीलता से तेज अर्थात प्रकाश का निर्माण होता है।

द्यावा-पृथिवी=द्युलोक अर्थात् सूर्य लोक में उत्पन्न होने वाले दो ही तत्व हैं-

१-वायु (Electricity तथा Heat)

२-तेज (Light Rays)

इन्हें वैदिक विज्ञान में द्यावा तथा आधुनिक विज्ञान में Energy कहते हैं।

पृथ्वी पर पाये जाने वाले गन्धहीन पदार्थों को आपः तथा गन्धयुक्त पदार्थों को पृथिवी तत्त्व कहते हैं तथा इन दोनों का संयुक्त नाम भी पृथिवी तत्त्व है, जिसे आधुनिक विज्ञान की भाषा में Matter कहते हैं। किसी Engine को चलाने के लिए द्यावा-पृथिवी (Energy- Matter) दोनों की आवश्यकता होती है।

अग्नि-सोम

अग्नि तापक्रम को बढ़ाती है, सोम तापक्रम को घटाता है। इसी प्रकार दिन तापक्रम को बढ़ाता है तथा रात्री तापक्रम को घटाती है। सूर्य तापक्रम को बढ़ाता है तथा चन्द्रमा तापक्रम को घटाता है। 'अप्सु शीतता' यह वैशेषिक दर्शन का सूत्र है। आपः अर्थात् पृथ्वी में पाये जाने वाले गन्धहीन तथा गन्धयुक्त पदार्थों का स्वभाव शीतल होता है। इनमें स्थित अग्नि तत्त्व की उपस्थिति में ये उष्ण प्रतीत होता है। यदि लोहे के एक टुकड़े से सारी अग्नि निकाल ली जाए तो यह अपनी स्वाभाविक शीतलता को प्राप्त हो जाता है। पृथिवी का स्वभाव शीतल होने के कारण यह सोम है तथा सूर्य का स्वभाव उष्ण होने के कारण यह अग्नि है। पृथ्वी पर स्थित पेड़-पौधे सूर्य की अग्नि से वृद्धि को प्राप्त होते हैं। सूर्य की जो उष्मा निर्माणकार्य में लगती है उससे पृथ्वी का तापक्रम नहीं बढ़ता। इसलिए औषधियों को सोम कहते हैं। वैदिक विज्ञान के अनुसार अग्नि-सोम को जन्म देती है तथा सोम अग्नि को जन्म देता है। पृथ्वी पर पाये जाने वाला सभी प्रकार का ईंधन जलकर हमें अग्नि प्रदान करता है। ईंधन सोम का एक रुप है।

यदि ब्रह्माण्ड में केवल ताप बढ़ाने के साधन होते तो यह जलकर राख हो जाता और यदि केवल ताप घटाने के साधन होते तो यह पत्थर हो जाता। अग्नि तथा सोम के उचित सामंजस्य से ही पृथ्वी पर जीवन उपयोगी ताप स्थिर रहता है।

वैदिक साहित्य में सोम शब्द का प्रयोग अत्यन्त व्यापक अर्थों में किया गया है। 'सोम' का प्रयोग परमेश्वर, राजा, औषधि, चन्द्रमा, सूर्य, जल, ऐश्वर्य, हवि आदि अनेक अर्थों में किया गया है। सोम निर्माण के समय अग्नि तत्त्व को ग्रहण करता है तथा विखंडन के समय अग्नि छोड़ता है। सूर्य के अन्दर जिस पदार्थ के जलने से अग्नि पैदा होती है, उसे सोम कहते हैं।

ब्रह्मांड में पायी जाने वाली प्रत्येक क्रियाशीलता का कारण प्राण है। परन्तु प्राण चेतन का गुण है जड़ (Lifeless) का नहीं। चेतन पदार्थ केवल दो हैं-

१-परमात्मा २- आत्मा

परमात्मा एक है, आत्मा अनेक हैं। परमात्मा सर्वज्ञ है, आत्मा अल्पज्ञ है। परमात्मा ब्रह्माण्ड का अधिकारी है तथा आत्मा अपने शरीर का अधिकारी है।

अब प्रश्न यह है कि प्रकृति जड़ होने के कारण प्राणहीन है तो फिर इसमें गति कहाँ से आ गयी। इसका उत्तर है कि प्रकृति रुपी घड़ी में परमात्मा अपनी असीम शक्ति से चाबी भरता है। यह चाबी खुलती रहती है तथा सृष्टि चलती रहती है। जब यह चाबी समाप्त हो जाती है तो प्रलय हो जाती है।

अनिश्वरवादी विज्ञान कभी भी सृष्टि की पूर्णरुप से व्याख्या नहीं कर सकता। God Particle भी परमात्मा द्वारा भरी गयी शक्ति का अंशमात्र है।

राष्ट्र-चिन्तन

भगतसिंह नास्तिक क्यों?

काल-कोठरी में सड़कर मरने से फाँसी पर चढ़ जाना अपेक्षाकृत अच्छी बात है। लोग कहते हैं कि मौत के बाद बहुत अच्छी जिन्दगी मिलती है, परन्तु मैं पुनः भारत में ही जन्म लूँगा।

❑राजेशार्य आट्टा

प्रिय पाठकवृन्द! वर्तमान में वैज्ञानिक सुख-सुविधाओं का उपभोग करता हुआ मानव उनके आविष्कारक वैज्ञानिकों का गुणगान करता हुआ यह भूल जाता है कि उनमें बहुत से वैज्ञानिक नास्तिक थे (क्योंकि उनका विषय प्रकृति का अध्ययन ही था) अर्थात् संसार को प्रकाश व सुविधा देने के कारण ही उनका सम्मान किया जाता है, नास्तिक होने के कारण नहीं। अपने प्राणों की आहुति देकर हमें स्वतंत्र कराने वाले वीरों के विषय में भी यही बात है अर्थात् पं० रामप्रसाद बिस्मिल इसलिए आदरणीय नहीं हैं कि वे सच्चे आस्तिक थे और वीर भगत सिंह इसलिए आदरणीय नहीं है कि वे कट्टर नास्तिक थे। देश की जनता में आज भी उनके लिए जो प्यार और सम्मान है उसका कारण उनका राष्ट्र-प्रेम व बलिदान है। पर कुछ दशकों से मार्क्सवादी विचारधारा के लोग इस बात से परेशान हैं कि भगतसिंह को देशभक्त क्रान्तिकारी ही क्यों माना जाता है; नास्तिक, लेनिनवादी व मार्क्सवादी क्यों नहीं? यही कारण है कि ये लोग भगतसिंह की अन्य रचनाओं की अपेक्षा 'मै नास्तिक क्यों हूँ' को सबसे महत्त्वपूर्ण मानते व प्रचारित करते हैं। इससे पाठक को लगता है कि भगत सिंह नास्तिक होने के कारण ही क्रान्तिकारी बने और उन्हें नास्तिक बनाया रूस की क्रान्ति के जनक लेनिन की सफलता ने।

हमें नहीं भूलना चाहिए कि सफल व्यक्ति के व्यक्तित्त्व निर्माण में बहुत से व्यक्तियों व घटनाओं का योगदान होता है, जो अनुकूल भी होती हैं और प्रतिकूल भी। केवल लेनिनवाद व मार्क्सवाद को पढ़कर ही भगत सिंह क्रान्तिकारी बने हों, ऐसा नहीं है, क्योंकि पंजाब की भूमि तो कभी से वीरों की जननी रही है। गुरु अर्जुनदेव, गुरु तेग बहादुर, गुरु गोविन्द सिंह, भाई मतिदास, बन्दा वैरागी, जोरावर सिंह, फतेह सिंह, हकीकतराय, गुरु राम सिंह, लाला हरदयाल, लाला लाजपतराय जैसे बलिदानी इस वीर प्रसविनी ने पैदा किये हैं। चाचा अजीत सिंह का निर्वासन व उनके वियोग में बहते चाची हरनाम कौर के आँसू नन्हे भगतसिंह को अंग्रेजों से लड़ने के लिए प्रेरित कर रहे थे। पिता किशनसिंह की अंग्रेजों से होने वाली टक्कर को वे प्रतिदिन देखते थे। जलियाँवाला बाग के शहीदों के खून से रंगी मिट्टी उनके सोये क्रान्तिभाव को जगाती थी। शहीद करतार सिंह सराभा व मदन लाल ढींगरा की फाँसी के चित्र उनकी नींद चुरा रहे थे। पूरे देश में आजादी के लिए जो छटपटाहट थी, भगतसिंह उसे पूरी गम्भीरता से निहार रहे थे। नेशनल कॉलेज लाहौर के क्रान्तिकारी शिक्षक भाई परमानन्द, जयचन्द्र विद्यालंकार आदि का मार्गदर्शन उन्हें देश-विदेश की क्रान्तियों से परिचित करा रहा था। उन्हें इस बात का सदा स्मरण रहता था कि उनके दादा सरदार अर्जुनसिंह ने उनके यज्ञोपवीत संस्कार के समय घोषणा की थी कि उन्हें खिदमते वतन के लिए वक्फ कर दिया है। वीर सावरकर द्वारा लिखित '१८५७ का स्वातन्त्र्य समर' तो उन्हें इतना झकझोर गया कि अंग्रेजों द्वारा प्रतिबन्धित होने पर भी उसे छपवाकर ही दम लिया।

हाँ, यह भी सत्य है कि धर्म का चोगा पहनने वाले कुछ चालाक व धूर्त लोगों द्वारा अशिक्षित व गरीब जनता का शोषण होते देख कर उनमें नास्तिक भावना आ गई थी और अंग्रेजों व उनके समर्थक भारतीय लोगों द्वारा किये गये अन्याय व अत्याचार को देखकर वे समाजवाद के समर्थक बन गये अर्थात् वे ऐसे क्रान्तिकारी बन गये, जो समाज से हर प्रकार की (सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक व धार्मिक) शोषण की भावना समाप्त करने के लिए धर्म के रूप में प्रचलित अंधविश्वास को नहीं मानते थे? मार्क्स व लेनिन के साहित्य ने उनकी भावनाओं को मजबूती प्रदान की। उन्हें बलिदान की उच्चता के शिखर पर पहुँचाने में इन सबका योगदान रहा है। भगतसिंह केवल विदेशी विचारधारा द्वारा पोषित धर्मविरोधी क्रान्तिकारी नहीं थे।

५-६ अक्तूबर १९३० ई० को लिखे लेख (श्री विपिनचन्द्र प्रकाश १९७२ में इसे प्रकाश में लाये थे) 'मैं नास्तिक क्यों' की आड़ लेकर भारत के आदरणीय महापुरुषों की उपेक्षा करने वाले मार्क्स व लेनिन के पुजारियों को यह

नहीं भूलना चाहिए कि जब किसी सम्प्रदाय (कम्यूनिज्म भी सम्प्रदाय है। जैसे मुस्लिम मुहम्मद साहब, कुरान और मक्का मदीना पर आस्था रखते हैं, उसी तरह कम्यूनिस्ट मार्क्स, दास कैपिटल व कम्यूनिस्ट मैनीफेस्टो को मानते हैं) के महापुरुष विदेशी हो जाते हैं और वह विदेशी भाषा में बोलने सोचने लगता है तो संसार की कोई ऐसी शक्ति नहीं, जो उसे अपने देश के प्रति निष्ठावान बनाये रख सके। स्मरण रहे, भगत सिंह के लगभग सभी प्रेरक व सहयोगी आस्तिक थे, फिर भी भगतसिंह ने उनके प्रति घृणा व्यक्त नहीं की, अपितु उनके ईश्वर-विश्वासी होने को अन्य गुणों की तरह विशेष गुण मानकर लिखा है।

यदि श्री चमन लाल द्वारा सम्पादित 'भगतसिंह के सम्पूर्ण दस्तावेज' (इसका प्राक्कथन भगतसिंह के छोटे भाई कुलतार सिंह ने लिखा है) प्रामाणिक है और उसमें 'चाँद के फाँसी' अंक से संग्रहित व मुकुन्द, अज्ञात आदि नाम से लिखे लेख भगतसिंह के ही हैं, तो उन्हें सम्मान मिलना चाहिए। अमर शहीद बलवन्तसिंह के विषय में भगतसिंह ने बड़ी श्रद्धा से विस्तारपूर्वक लिखा है। उसके आरम्भ में ही लिखते हैं-

वे बड़े ईश्वर भक्त थे।-- (नवम्बर १९२८)

२८ फरवरी १९३३ के 'हिन्दी सन्देश' में भगतसिंह द्वारा १९२४ में लिखा लेख 'पंजाब की भाषा---' प्रकाशित हुआ था। स्वामी रामतीर्थ के विषय में वे लिखते हैं-इतना महान देशभक्त तथा ईश्वरभक्त हमारे प्रान्त में पैदा हुआ हो, परन्तु उसका स्मारक तक न दीख पड़े, इसका कारण साहित्यिक फिसड्डीपन के अतिरिक्त क्या हो सकता है?'

फरवरी १९२८ में 'महारथी' में भगतसिंह ने गुरु रामसिंह के विषय में लिखा है-'श्री गुरु रामसिंह एक कट्टर विप्लवी थे। एक प्रसिद्ध ईश्वरभक्त, समाज के दोष देखकर एक विद्रोही समाज-सुधारक बन गया और---। गुरु रामसिंह बड़े तेजस्वी तथा प्रभावशाली व्यक्ति थे। उनके असाधारण आत्मबल सम्बन्धी बहुत-सी बातें प्रसिद्ध हैं। ---ऐसी अनेक घटनाएं हैं। जो भी हो, इतना तो मानना ही पड़ेगा कि गुरुजी ईश्वर-भक्ति तथा उच्च चरित्र के कारण महान शक्तिशाली महापुरुष थे। अतः उक्त घटनाएं असम्भव नहीं।'

हमारा यह आग्रह बिल्कुल नहीं है कि भगतसिंह नास्तिक नहीं थे, क्योंकि व्यक्ति किसी भी विचारधारा से प्रभावित हो सकता है। भगतसिंह का नास्तिक होना इतना महत्वपूर्ण नहीं है, जितना देशभक्त होना; पर यह भी सत्य है कि वे धर्म (अहिंसा, सत्य, अस्तेय आदि) विरोधी नास्तिक नहीं थे। 'किरती' मई १९२८ में 'धर्म और हमारा स्वतंत्रता संग्राम' में भगतसिंह ने लिखा है-

'रूसी महात्मा टालस्टॉय ने अपनी पुस्तक Essay and Letters में धर्म पर बहस करते हुए इसके तीन हिस्से किए हैं-

१- Essentials of Religion यानी धर्म की जरूरी बातें अर्थात् सच बोलना, चोरी न करना, गरीबों की सहायता करना, प्यार से रहना वगैरह।

२- Philosophy of Religion यानी जन्म-मृत्यु, पुनर्जन्म, संसार रचना आदि का दर्शन।

३- Rituals of Religion यानी रस्मो रिवाज वगैरह।---

सो यदि धर्म पीछे लिखी तीसरी और दूसरी बात के साथ अन्धविश्वास को मिलाने का नाम है, तो धर्म की कोई जरूरत नहीं। इसे आज ही उड़ा देना चाहिए। यदि पहली और दूसरी बात में स्वतंत्र विचार मिलाकर धर्म बनता हो, तो धर्म मुबारक है। --- हमारी आजादी का अर्थ केवल अंग्रेजी चंगुल से छुटकारा पाने का नाम नहीं, वह पूर्ण स्वतंत्रता का नाम है-जब लोग परस्पर घुल-मिलकर रहेंगे और दिमागी गुलामी (मजहबी संकीर्णता, जातीय भेदभाव, अन्धविश्वास आदि) से भी आजाद हो जायेंगे।''

भगतसिंह के इस मानवतावादी धर्म से किस सच्चे आस्तिक का विरोध होगा? ईश्वर भक्ति का उद्देश्य संसार से अन्याय, अत्याचार, अज्ञान आदि मिटाकर सुख-शान्ति स्थापित करना ही तो होता है। इस परिभाषा के अनुसार क्या भगतसिंह को नास्तिक कहा जा सकता है?

यदि 'मैं नास्तिक क्यों हूँ' यह सम्पूर्ण लेख भगतसिंह का ही है, तो इसके कुछ अंशों पर विचार करना आवश्यक लगता है।

'मैंने तो ईश्वर पर विश्वास करना तब छोड़ दिया था जब मैं एक अप्रसिद्ध नौजवान था। --मेरे बाबा, जिनके प्रभाव में मैं बड़ा हुआ, एक रूढ़िवादी आर्यसमाजी हैं। --उन्हीं (पिता किशन सिंह) की शिक्षा से मुझे स्वतंत्रता के ध्येय के लिए अपने जीवन को समर्पित करने की प्रेरणा मिली। --- रामप्रसाद बिस्मिल एक रूढ़िवादी आर्यसमाजी थे। ---''

'मैंने अराजकतावादी नेता

> भगतसिंह ने लिखा है कि एक आर्य समाजी और कुछ भी हो, नास्तिक नहीं होता। उसी तरह यह भी सत्य है कि एक आर्यसमाजी और कुछ भी हो, रूढ़िवादी नहीं होता। उसके पास हर क्रिया का कारण होता है। ईश्वर, आत्मा, धर्म आदि को तर्क से सिद्ध करता है, केवल मान्यता से नहीं।

बाकुनिन को पढ़ा, कुछ साम्यवाद के पिता मार्क्स को; किन्तु ज्यादातर लेनिन, त्रात्स्की व अन्य लोगों को पढ़ा जो अपने देश में सफलतापूर्वक क्रान्ति लाए थे। वे सभी नास्तिक थे। ---१९२६ के अन्त तक मुझे इस बात का विश्वास हो गया कि सर्वशक्तिमान परम आत्मा की बात-जिसने ब्रह्माण्ड का सृजन किया, दिग्दर्शन और संचालन किया-एक कोरी बकवास है। मैंने अपने इस अविश्वास को प्रदिर्शत किया। मैंने इस विषय पर अपने दोस्तों से बहस की। मैं एक घोषित नास्तिक हो चुका था। ---(विश्व की उत्पत्ति तथा मानव की उत्पत्ति के लिए) इतिहास देखो। इसी प्रकार की घटना से जन्तु पैदा हुए और एक लम्बे दौर के बाद मानव। डारविन की 'जीव की उत्पत्ति' पढ़ो। ---मैंने उन नास्तिकों के बारे में पढ़ा है, जिन्होंने सभी विपदाओं का बहादुरी से सामना किया, अतः मैं भी एक मर्द की तरह फांसी के फंदे की अंतिम घड़ी तक सिर ऊँचा किए खड़ा रहना चाहता हूँ। -'

> जब शरीर की मृत्यु के बाद पुनर्जन्म लेने वाले आत्मा की सत्ता में सन्देह नहीं, तो पुनर्जन्म देने वाले परमात्मा के अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न क्यों? और जब नास्तिकों की दृष्टि में ईश्वर है ही नहीं, तो उसका विरोध क्यों?

व्यक्ति जैसा साहित्य पढ़ता है, उससे उसके विचार तो प्रभावित होंगे ही। भगतसिंह क्रान्तिकारी परिवेश में पला था, देश में क्रान्ति का वातावरण था। अतः स्वाभाविक था कि भगतसिंह विदेशी क्रान्तिकारियों के भी सम्पर्क में (साहित्य द्वारा) आता। विदेशी क्रान्तिकारी तथाकथित धार्मिक लोगों द्वारा किये गये गरीबों के शोषण को देखकर धर्म विरोधी व नास्तिक बने थे। अतः उनके सम्पर्क से यदि भगतसिंह नास्तिक बना तो इससे देश का कोई बड़ा नुकसान नहीं हुआ, क्योंकि नास्तिक बन कर वह जो क्रान्ति फैला गया, सम्भव है आस्तिक रहकर न फैला पाता।

ऊपर के अंतिम शब्दों से यह लगता है कि भगतसिंह यह सिद्ध करना चाहता था कि जैसे ईश्वर का आश्रय लेकर बहुत से बलिदानी हँसते-हँसते मृत्यु का सामना करते हैं, नास्तिक रहकर भी ऐसा किया जा सकता है; क्योंकि इसी लेख में भगतसिंह ने यह भी लिखा है-' (ईश्वर पर) विश्वास कष्टों को हल्का कर देता है, यहाँ तक कि उन्हें सुखकर बना सकता है। ईश्वर से मनुष्यों को अधिक सांत्वना देने वाला एक आधार मिल सकता है। 'उसके' बिना मनुष्य को स्वयं अपने ऊपर निर्भर होना पड़ता है। तूफान और झंझावात के बीच अपने पाँवों पर खड़ा रहना कोई बच्चों का खेल नहीं है।'

अर्थात् भगतसिंह ने आस्तिकता के महत्व को स्वीकार किया है। इसे निरर्थक नहीं माना जा सकता। हाँ, भगतसिंह की दृष्टि में वह अधिक वीर है, जो ईश्वर के आश्रय को नकार कर केवल अपने भरोसे पर निडर होकर मृत्यु का आलिंगन करता है। पर यह भी सत्य है कि संसार में पूर्ण आस्तिक और पूर्ण नास्तिक लोग थोड़े ही होते हैं। अधिकतर तो अधूरे ही होते हैं। जबकि भगतसिंह पूरा नास्तिक (अपने आपको) सिद्ध करना चाहता था, जो बहुत कठिन (सच्चे आस्तिक की तरह) काम है।

हमारे विचार से संकटों में दृढ़ रहना आस्तिक-नास्तिक के कारण नहीं, संकल्प के प्रति समर्पण का ही परिणाम होता है। मृत्यु से बदतर जीवन देने वाले अण्डमान जेल की यातनाओं को सहते-सहते कितने ही वीर अपने जीवन की डोर तोड़ गये। एक दिन दोपहर को बाहर लू चल रही थी। सावरकर अन्दर कोल्हू चला रहे थे। अचानक हाँफने लगे, चक्कर आ गया और धम्म से नीचे बैठ गये। अति श्रम के कारण पेट में बल पड़ गया। पेट पकड़कर दीवार के सहारे मस्तक रखकर आँखें मूँद ली और बेहोश हो गये। होश में आने पर भी मन उसी शून्यता को चाहने लगा। बार-बार आत्महत्या का आकर्षण आकर्षित करता रहा। मन और बुद्धि में संघर्ष चलता रहा। अन्त में बुद्धि की विजय हुई-'यदि मरना ही है तो जिस सेना के तुम सैनिक हो, उसी सेना का कोई एक काम करके फिर मरो। फाँसी खाकर कदापि नहीं।'

डार्विन का विकासवादी सिद्धान्त उसके शिष्यों द्वारा ही नकारा जा चुका है। ईश्वर के विषय में मित्रों (समवयस्क युवाओं) से बहस से कोई लाभ नहीं होता। उसके लिए तो दर्शन शास्त्रों के विद्वानों का संग करना चाहिए। पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय जैसे दार्शनिक विद्वान् नास्तिकता के प्रवाह को रोकने के लिए 'आस्तिकवाद' जैसा अनुपम ग्रन्थ १९२६ ई० तक लिख चुके थे। पं० रामचन्द्र देहलवी जैसे शास्त्रार्थ महारथी, 'ईश्वर ने दुनिया क्यों बनाई' जैसे प्रश्नों का समाधान चुटकी बजाते ही कर देते।

भगतसिंह ने जिन सफल क्रान्तिकारियों के विषय में पढ़ा, उनकी सफलता का आधार नास्तिकता ही था, यह आवश्यक नहीं, क्योंकि भारत के लगभग सभी क्रान्तिकारी आस्तिक थे। क्या उनकी सफलता में कोई सन्देह कर सकता है? ऋषि दयानन्द जैसे सच्चे आस्तिक क्रान्तिकारी की सफलता संसार के प्रत्येक देश में (सामाजिक व धार्मिक परिवर्तन) दृष्टिगोचर हो रही है।

जैसा कि इसी लेख में भगतसिंह ने लिखा है कि एक आर्यसमाजी और कुछ भी हो, नास्तिक नहीं होता।

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

आध्यात्मिक-चिन्तन

जप कैसे करें!

❒स्व० श्री पं० यशपाल आर्य बंधु

जप, उपासना का ही एक अंग है और उपासना कैसे करें-इस विषय में महर्षि का निर्देश है कि जब उपासना करना चाहें तब एकान्त शुद्ध देश में जाकर, आसन लगाकर, प्राणायाम कर, बाह्य विषयों से इन्द्रियों को रोक, मन को नाभि प्रदेश में या हृदय, कण्ठ, नेत्र, शिखा अथवा पीठ के मध्य हाड़ में किसी स्थान पर स्थिर कर अपने आत्मा और परमात्मा का विवेचन करके परमात्मा में मग्न होकर संयमी होवे। जब उन साधनों को करता है तब उसका आत्मा और अन्तःकरण पवित्र होकर सत्य से पूर्ण हो जाता है। नित्यप्रति ज्ञान-विज्ञान बढ़ा कर मुक्ति तक पहुँच जाता है। जो आठ पहर में एक घड़ी भर भी इस प्रकार ध्यान करता है, वह सदा उन्नति को प्राप्त हो जाता है। (सत्यार्थ प्रकाश)

ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका में भी महर्षि लिखते हैं कि-'जब-जब मनुष्य लोग ईश्वर की उपासना करना चाहें, तब-तब इच्छा के अनुकूल एकान्त स्थान में बैठकर अपने मन को शुद्ध और आत्मा को स्थिर करें तथा सब इन्द्रियों और मन को सच्चिदानन्द आदि लक्षण वाले अन्तर्यामी अर्थात् सब में व्यापक और न्यायकारी परमात्मा की ओर अच्छे प्रकार से लगाकर सम्यक् चिन्तन करके उसमें अपने आत्मा को नियुक्त करें। फिर उसी की स्तुति, प्रार्थना और उपासना को बारबार करके अपने आत्मा को भलीभाँति उसमें लगा दें। ---इसी (ओ३म्) नाम का जप अर्थात् स्मरण और इसी का अर्थ विचार सदा करना चाहिये कि जिसमें उपासक का मन एकाग्रता, प्रसन्नता और ज्ञान को यथावत् प्राप्त होकर स्थिर हो। जिससे उसके हृदय में परमात्मा का प्रकाश और परमेश्वर की प्रेम-भक्ति सदा बढ़ती जाये।'

उपर्युक्त विवरण में शुद्ध एकान्त स्थान पर बहुत बल दिया है। उपासना के लिए इसका महत्व भी बहुत है। जप आदि के लिए किसी वन, उपवन का शांत और शुद्ध स्थान, किसी नदी, तालाब अथवा झरने आदि का किनारा इसलिये उपयुक्त रहता है कि वहाँ 'उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनां धिया विप्रो अजायत' के अनुसार मन प्रभु की महिमा निहार कर स्वतः ही शांत और स्थिर हो जाता है। पं० प्रकाशवीर शास्त्री के अनुसार-'आर्यावर्त देश आरम्भ से ही जंगलों के प्रति शांत, एकान्त और निर्बाध स्थान होने से आकर्षित रहता आया है। इसी कारण हमारी सभ्यता भी अरण्यक कहलाती है। जीवन के उन मूलभूत तत्त्वों को, जिन्हें अनुसंधान का दावा भरने वाली पश्चिमी सभ्यता आज भी स्पर्श नहीं कर पाई है, इस देश के ऋषियों ने मानवीय उत्कर्ष से प्रेरित होकर नदियों, जंगलों और पर्वतों की कन्दराओं में बैठकर ही खोजा था। परन्तु समय के साथ वातावरण भी बदलता है, मनुष्य जबकि अपनी वृद्धि पर रोक नहीं लगा रहा है और आशातीत विकास उसमें हो रहा है, फिर इतनी 'अपां समीपे' वाली सुविधायें तो सबको मिलनी कठिन ही हैं पर उसका दूसरा प्रकार आचार्य मनु यह भी लिखते हैं-'शुचौ देशे प्रति--' अर्थात् शुद्ध और पवित्र स्थान में स्थिर आसन लगाकर इस कृत्य की पूर्ति कर लिया करें। सम्पन्न व्यक्ति तो अपने घरों में कोई विशेष स्थान भी इस कार्य की पूर्ति के लिये नियत कर सकते हैं।' (द्रष्टव्य-वैदिक संध्यासार) ऐसे उपासना-ग्रहों में उपासना आदि के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं किया जाना चाहिए। ऐसे विशेष निश्चित स्थानों के वातावरण तथा परमाणुओं में ऐसी दिव्यता आ जाती है कि वहाँ जाते ही मन स्वतः ही शांत हो जाता है।

स्थान की भाँति जपोपासना के लिये यदि समय भी निश्चित कर लिया जावे तो और भी उपयुक्त रहता है। जैसे खाने का समय निश्चित होने पर, समय आने पर स्वतः ही भूख लगने लगती है, वैसे ही प्रार्थनोपासना आदि का समय भी निश्चित होने पर वैसे ही आत्मिक भूख भी स्वतः ही जाग उठेगी। लोक-व्यवहार में भी हम यही देखते हैं कि बड़े आदमियों से मिलने का समय भी प्रायः निश्चित हुआ करता है। ब्रह्म सबसे बड़ा है, फिर उससे मिलने का समय निश्चित क्यों न हो? कोई तो ऐसा समय होना चाहिए कि जिसमें उपासना आदि के अतिरिक्त अन्य कोई कार्य न हो। हमारे शास्त्रों ने ऐसा समय भी निश्चित किया है। वह है-ब्रह्म-मुहूर्त्त! ब्रह्म-मुहूर्त वस्तुतः ब्रह्म से मिलने का ही समय है। वैसे प्रातः सायं के संधि वेला भी संध्या के लिये

उपयुक्त माने गये हैं। प्रणव जप रात्रि को सोते समय भी किया जावे तो उसका विशेष लाभ होता है। इससे उपासक की वासनामय देह ही बदल जाती है। रात्रि भर मन में उसी का ध्यान बना रहता है और एक विचित्र मस्ती की अनुभूति होती है। किन्तु यदि व्यक्ति ऐसा अभ्यास बना ले कि चलते-फिरते, उठते-बैठते हर समय जप होता रहे तो अत्यन्त उत्तम बात है। इसके लिये सतत् अभ्यास की आवश्यकता होती है। बिना सतत् अभ्यास के ऐसी स्थिति आनी कठिन होती है। किन्तु जब हम अपने श्वासों के मूल्य को समझने लगेंगे तो इन्हें वृथा नहीं गंवायेंगे। कहा भी है कि-

स्वांस-स्वांस पर ओ३म् जपो, वृथा स्वांस मत खोय।
न जाने इस स्वांस का, आवन हो या न होय।।

समय और स्थान आदि के पश्चात् नम्बर आता है आसन का। उपासना में आसन एक उपयोगी वस्तु है। किन्तु आसन ऐसा होना चाहिए कि कष्टदायक न हो। इसके लिए सुखासन, सिद्धासन, वज्रासन आदि में से अपनी इच्छा और सामर्थ्यानुसार कोई एक चुना जा सकता है। ध्यान रहे कि आसन साध्य नहीं, साधन है। साधन साध्य तक पहुंचने के लिए होता है। फिर भी वृद्धावस्था अथवा अन्य शारीरिक विकारों के कारण कोई व्यक्ति आसन नहीं लगा सकता तो भी लेटे-लेटे या खड़े रहकर अथवा चलते-फिरते जप किया जा सकता है। परन्तु यह आपत्काल के लिए है, अन्यथा आसन में ही बैठना चाहिए। यह इसलिये भी आवश्यक है कि आसन में बैठकर प्राणायाम आदि क्रियायें भी आसानी से की जा सकती हैं। वैसे भी आसन मन को एकाग्र करने में सहायक होता है।

प्राणायाम का जपोपासना के साथ अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है। विधिपूर्वक किया गया प्राणायाम मन को बांधकर रख देता है। यदि इससे पूर्व यम-नियमादि का पालन किया जावे तो सोने पर सुहागे का काम करता है। आचमन और अंग स्पर्श आदि क्रियायें भी मन को एकाग्र करने में सहायक होती हैं। सत्य तो यह है कि ये मन को उपासना के लिए तैयार करने के लिए ही हैं। बिना तैयारी के किया कार्य उत्तमता एवं पवित्रता को प्राप्त नहीं होता पर जब वह तैयारी के साथ किया जाता है तो निश्चित ही उसमें उत्तमता आ जाती है। हमारी उपासना में उत्कृष्टता आवे इसलिए ये सब साधन अपनाने आवश्यक हैं। जब समय, स्थान, यम, नियम, आसन, प्राणायाम, आचमन, अंगस्पर्श आदि क्रियायें कर ली जाती हैं तो मन में उपासना के लिए तत्परता का आभास होने लगता है और मन जप में लगने लगता है। इसलिए इन साधनों को अनावश्यक न समझा जावे। साधकों के लिए ये अत्यन्त उपयोगी हैं। इन सबसे भी उपयोगी वस्तु है सतत् अभ्यास। इसमें व्यतिरेक नहीं होना चाहिए।

महात्मा नारायण स्वामी जी प्रणवोपासना के सम्बन्ध में अपने स्वाध्याय और साधना के अनुभवों को बतलाते हुए लिखते हैं कि-'उपासना का प्रारम्भ जिसे पहला दरजा कहते हैं, जप से शुरु होता है। योग दर्शन में ईश्वर का नाम ओ३म् और उसके अर्थ के साथ जप करने का विधान किया गया है। इस ओंकार के जप की मर्यादा यह है कि मनुष्य हृदय में यह विचार रखते हुए कि ओ३म् (रक्षक परमेश्वर) हृदय में होते हुए उसकी रक्षा कर रहा है, ओंकार का वाणी से उच्चार करे। पहली बात अर्थ की भावना और दूसरी बात (उच्चारण) जप है। इस जप से कोई श्वास जप-काल में खाली नहीं जाने देना चाहिए। इस जप का मनोवैज्ञानिक प्रभाव यह होता है कि वाच्य का गुण जप करने वाले में आ जाता है। इस प्रकार ईश्वर के जिस भी गुणवाचक नाम का मनुष्य जप करता है, वह गुण उसके भीतर आ जाता है और इस गुण वृद्धि से जपस्वी ईश्वर के समीप होता जाता है। इस जप से मनुष्य ईश्वर के साक्षात्कार करने की योग्यता प्राप्त करता है। (देखें-नारायण उपेदश, पृष्ठ १९२-१९३)

योग रहस्य में उक्त महात्मा जी लिखते हैं कि-'जप का प्रारम्भ योगाभ्यास में प्रारम्भ से ही किया जाता है। इसकी दो सूरतें हैं। प्रारम्भ में तो जप गुण वृद्धि के लिये किया जाता है और अन्त में वाच्य को हृदय में प्रत्यक्ष करने के लिये। दोनों का विवरण कुछ खोलकर नीचे दिया जाता है। जप की पहली सूरत में गुण-वृद्धि- इस पहली सूरत वाले जप के लिये ईश्वर के ऐसे गुणवाचक नामों को छाँट लिया जाता है, जिन गुणों की मनुष्य में आने की संभावना होती है। उदाहरण के लिए मित्र, वरुण, अर्यमा, ओ३म् आदि नामों का जप किया जा सकता है क्योंकि इन नामों से ईश्वर की समद्रष्टता, श्रेष्ठतम न्याय और रक्षा आदि गुणों का प्रभाव, जप-कर्ता की आत्मा पर पड़कर बार-बार के अभ्यास से, वे गुण उसमें आ जाया करते हैं। परन्तु सविता (रचियता) सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, फलदाता आदि नामों की, जप के लिए, सार्थकता नहीं है। क्योंकि इन नामों से जो गुण प्रकट होते हैं, उनकी मनुष्यों में आने की संभावना नहीं है। इसलिये जप की पहली सूरत यह है कि अर्थ के चिन्तन द्वारा चित्त को एकाग्र किया जावे और अपने मन में साथ-साथ गुण वृद्धि की जावे।

जप की दूसरी सूरत परमात्म प्रत्यक्ष- जप की दूसरी सूरत यह है कि वाचक के अर्थ (वाच्य) को हृदय में देखा जावे। यह जप की अत्यन्त उत्कृष्ट और अन्तिम सूरत है। इस अवस्था तक पहुँचने के लिए जप असाधारण मात्रा में किया जाता है।'' (योग रहस्य, पृष्ठ ५६-५७)

कहानी

तिनके का सहारा

❒रामफल सिह आर्य
८७/एस-३, बी० बी० एम० बी० कालोनी,
सुन्दरनगर -१७५०१९ (०९४१८२-७७७१४)

सर्दियों की ऋतु में कई दिनों के पश्चात् आज धूप निकली थी। पिछले कई दिनों से लगातार बूंदा-बांदी चली हुई थी। शीत अपने पूरे यौवन पर जा पहुंची। बाहर तीखी हवा चल रही थी। आस पास की पहाड़ियाँ हिम से लदी पड़ी हैं। उनके ऊपर से बहकर आने वाला वायु हड्डियों तक को कंपकंपा कर चला जाता है। पहाड़ों पर जब सर्द ऋतु में वर्षा होती है तो वरदान एवं अभिशाप दोनों को इकट्ठा ले आती है। वरदान इसलिये कि सारे वर्ष के लिये पानी का एक भण्डार बर्फ के रूप में पहाड़ों पर जमा हो जाता है जिससे समस्त जीवों की प्यास मिटती है और अनेकों पनबिजली परियोजनाओं को भी चलाने के लिये स्रोत मिल जाता है। अनेकों फल, फसलें एवं वनस्पतियां ऐसी हैं जो बर्फ के कारण ही अधिक फलती फूलती हैं।

अभिशाप इसलिये कि इस ऋतु में निर्धन परिवारों की जान पर आ बनती है। वर्षा ऋतु में एक तो वैसे ही कम काम मिल पाता है, ऊपर से यह ठण्ड! घर में खाने-पीने एवं उचित वस्त्रों के अभाव में जीवन दूभर हो जाता है। सत्य ही है गरीबों के लिये तो हर ऋतु कष्टदायी है। गर्मी हो या सर्दी या फिर वर्षा! जीवन के संघर्ष से दो चार हाथ करते इन लोगों की कठिनाईयां अब और अधिक बढ़ रही हैं। जब हम बिजली के हीटर के आगे बैठ कर स्वादिष्ट पकवानों का आनन्द लेते हैं, उस समय ये निरीह प्राणी अपने भाग्य को कोस रहे होते हैं। वर्षा के कारण लकड़ियाँ भी गीली हो जाती हैं, इन्हें चूल्हे में जलाना भी किसी युद्ध से कम नहीं होता।

> यह डायन शराब जिस घर में घुस जाती है, उसका नाश करके ही छोड़ती है। शराब पीकर गाली गलौच एवं मारपीट उसका रोज का काम है। उसे कोई कुछ कहे तो आत्महत्या की धमकी देता है।

प्रातः काल दूरदर्शन पर महिलाओं के अधिकारों एवं सुरक्षा को लेकर गर्मागर्म बहस चली हुई थी, जिसे मैं और मेरी पत्नी दोनों देख रहे थे। इस बहस में नेता, महिला आयोग की अधिकारी एवं पत्रकार भाग ले रहे थे। कुछ बातों में हम उस बहस के विचारों से सहमत थे और कुछ में नहीं। दूरदर्शन पर हुई बहस के कारण मैं और मेरी पत्नी भी कुछ देर तक आपस में वाद प्रतिवाद करते रहे। उसके उपरान्त बाहर आंगन में धूप उतर आई तो मैं उठकर बाहर चला आया और आंगन में कुर्सी डाल कर आकाश में बादलों के साथ सूर्यदेव की लुका-छिपी का खेल देख रहा था। यद्यपि इस समय धूप खिली हुई थी और पेड़ों के पत्ते भी चमकदार होकर मानों धूप का आनन्द ले रहे थे। वर्षा में नहा कर उनके ऊपर एक अद्‌भुत निखार आ गया है। कभी-२ वायु का शीतल स्पर्श उन्हें छेड़ कर चला जाता था। आकाश में कहीं-२ काले एवं श्वेत बादल ठीक उसी प्रकार से पहरा दे रहे थे जैसे युद्ध की समाप्ति पर भी कुछ सैनिक थोड़े समय के लिये वहीं रह जाते हैं। सूर्य एवं बादलों में युद्ध हो रहा था, जिसका निर्णय वायु के हाथों में था। जब वायु का झोंका आता- बादलों को मानो सेनापति का आदेश सुना जाता। सूर्य देवता के निकलने पर तन को गरमी की अनुभूति होती तो बादलों के आने पर गर्म चादर को और अधिक लपेटना पड़ता। बहुत समय तक यही क्रीड़ा चलती रही, परन्तु अन्त में विजय बादलों की हुई। उन्होनें अपनी सेना को एकत्रित किया और सूर्य को ढक लिया। थोड़ी ही देर में वर्षा की बूंदें फिर आ गई।

मैं शीघ्रता से सामान उठा कर अन्दर जाने लगा कि गली में एक महिला दिखाई दी। उसके साथ चार बच्चे भी थे और उसने सिर पर लकड़ी का एक गट्ठर उठा रखा था। एक बच्चा लगभग एक वर्ष का होगा जो उसने कपड़े की झोली बना कर पीठ पर बांध रखा था। एक दो-अढ़ाई वर्ष का था जो अंगुली पकड़े था। एक तीन-चार वर्ष का था जो उसके साथ-२ चल रहा था और एक बड़ी लड़की जो सात-आठ वर्ष की होगी, उसने भी कुछ लकड़ियां बांध कर सिर पर रखी

हुई थीं। एकदम प्रारम्भ हुई वर्षा में उन्हें सूझ ही नहीं रहा था कि वे कहाँ पर आश्रय पायें। मेरे उनकी ओर देखने पर उनकी आंखों में एक आशा की किरण जगी। मैंने उन्हें अन्दर आने के लिए कहा तो पहले वह महिला कुछ झिझकी परन्तु फिर वर्षा और तेज हो गई तो उसे बच्चों समेत अन्दर आना पड़ा। लकड़ी का गट्ठर उसने बरामदे में एक ओर रख दिया। सर्दी की अधिकता से बच्चे ठिठुरने लगे। पांवों में उन्होंने केवल चप्पलें ही डाल रखीं थीं, अतः सर्दी और अधिक लग रही थी। मैंने हीटर जला कर उनके आगे कर दिया तो कुछ राहत मिली। मेरी पत्नी ने चाय बना कर उनके आगे रख दी। चाय पीकर वे स्वस्थ हो गये।

> यह दुनियां गिद्धों से भरी हुई है, जो मांस को नोचने के लिये ताक लगाये बैठे रहते हैं। कहते हैं ना! डूबते को तिनके का सहारा ही बहुत होता है। मेरा पति तो फिर जीता जागता मनुष्य है।

मैंने पूछा– 'आप कहाँ से आई हैं और इस भंयकर शीत में कहाँ घूम रही हैं?'

महिला बाली, 'बाबू जी! मैं पास के गांव की रहने वाली हूँ। मेरा नाम जगतारी देवी है। आज कई दिनों के पश्चात् धूप निकली थी, खेतों से लकड़ियाँ उठा कर लाई हूँ जिससे कम से कम एक सप्ताह तक तो भोजन बन सके। यह मुई वर्षा फिर आ गई अब पता नहीं कब तक रुकेगी।'

मेरी पत्नी कहने लगी, 'यह सब तो ठीक है, पर इन छोटे–२ बच्चों को कहाँ लिये फिर रही हो। क्यों नहीं इनको घर में ही छोड़ आई? ये तो सर्दी में कष्ट न पाते।'

वह बोली, 'घर में किसके सहारे छोड़ आती? मेरी सास की आंखों में काला मोतिया उतर आया है। उसे कुछ दिखाई नहीं देता और मेरा पति किसी काम का नहीं।'

'क्यों क्या करता है तुम्हारा पति?'

'बाबू जी, क्या बताऊं? सारा दिन यूं ही इधर–उधर धक्के खाता फिरता है। कुछ काम–धाम नहीं करता। रात को प्रतिदिन शराब पी लेता है, उसके उपरान्त उसे कुछ होश नहीं रहता।' महिला ने कहा।

मेरी पत्नी बाली, 'तुम्हें उसे समझाना चाहिये। प्यार से उसे कुछ कहोगी तो वह भला क्यों न मानेगा?'

जगतारी बोली, 'बहन जी! न वह प्यार जानता है और न फटकार। वह बिल्कुल निर्ल्लज बन चुका है। यह डायन शराब जिस घर में घुस जाती है, उसका नाश करके ही छोड़ती है। शराब पीकर गाली गलौच एवं मारपीट उसका रोज का काम है। उसे कोई कुछ कहे तो आत्महत्या की धमकी देता है। पहले–२ कुछ लोगों ने उसे समझाया था पर अब कोई कुछ नही कहता।'

'अच्छा, यह तुम्हारा नाम भला कैसा है? जगतारी देवी। मैंने ऐसे नाम कभी सुने नहीं' मैंने कहा।

वह बोली, 'हां, मेरा नाम मेरे पिताजी ने रखा था बड़े चाव से। वे कहा करते थे कि मेरी बेटी बड़ी भाग्यशालिनी है। बड़ी होकर जिस परिवार में जायेगी उसे सब दुःखों से तार देगी। उन्हें क्या पता था कि मेरा स्वयं का जीवन ही दुःखों का भण्डार बन जायेगा।' कहते–२ उसकी आखों में नमी आ गई।

'तुम्हारे पिता जी तुम से बहुत प्यार करते होंगे ना' मैंने पूछा। वह बोली, 'अरे बाबूजी, सच पूछो तो बस जीवन में एक ही व्यक्ति का प्यार मुझे मिला। वह थे मेरे पिताजी। मुझे बहुत स्नेह से रखते थे। हर समय मैं उनके कन्धों पर चढ़ी रहती थी। परन्तु विधाता को यह भी स्वीकार न था। जब मैं दस वर्ष की हुई तो वे भी एक दुर्घटना में चल बसे। मां ने जैसे तैसे मेरा विवाह चौदह वर्ष की आयु में ही कर दिया। गरीब की जवान लड़की भी मुसीबतों का भण्डार होती है। गांव के दुष्ट लोगों की दूषित आखें सदा मुझे घूरती रहती थीं। आगे पति मिला, वह भी निकम्मा और शराबी।'

कुछ देर तक कमरे में चुप्पी छाई रही। यह चुप्पी एक भार अनुभव होने लगी तो मैंने फिर कहा, 'तुम्हारी आयु तो अधिक नहीं लगती, फिर ये चार बच्चे––?'

'अरे बाबूजी! विवाह कम आयु में हुआ तो बच्चे भी आ गये। ये तो भगवान की ही देन हैं। इनसे मुझे कोई कठिनाई नहीं है। कभी यदि ईश्वर ने चाहा तो इन्हीं का सुख हो जायेगा। यह मेरा बेटा चन्द्रू है ना! पढ़ाई मे बहुत होशियार है। ऐ चन्द्रू! चल बाबूजी को नमस्ते कर। उसने तीसरे बेटे की ओर संकेत करके कहा। चन्द्रू झट से उठा और दोनों एडियाँ जोड़ कर सैनिक की भाँति सैल्यूट किया। मैंने हँस कर कहा– 'अरे वाह! तुम तो सैनिक बनोगे। अच्छा यह बेटी भी पढ़ती है क्या?' 'हाँ बाबूजी! यह चौथी कक्षा में है। यह यह भी बहुत गुणवान एवं समझदार है। पूनम नाम है इसका। घर का भी सारा काम कर लेती है और कक्षा में भी सदा प्रथम आती है। चल बेटा, सुना अपनी कविता जो तूने पन्द्रह अगस्त को सुनाई थी' जगतारी बोली। पूनम मेरी ओर देखकर मुस्कुराने लगी। उसके आगे के दो दांत टूटे हुए थे। उसकी मासूम एवं निश्छल मुस्कुराहट ने मुझे भाव विभोर कर दिया।

मेरी पत्नी बोली, 'तुम जानती हो आजकल महिलाओं की सुरक्षा एवं सहायता के लिये कितने कानून

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

स्वस्थ्य-चर्चा

पेट में गैस : कारण व उपचार

उदर में वायु बनने से अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। जीवन शैली में सुधार और उचित आहार विहार से इस पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

पेट गैस को अधोवायु कहते हैं। इसे पेट में रोकने से कई बीमारियाँ हो सकती हैं, जैसे- एसिडिटी, कब्ज, पेटदर्द, सिरदर्द, जी मिचलाना, बेचैनी आदि। लंबे समय तक अधोवायु को रोके रखने से बवासीर भी हो सकती है। आयुर्वेद कहता है कि आगे जाकर इससे नपुंसकता और महिलाओं में यौन रोग होने की भी आशंका हो सकती है।

गैस बनने के लक्षण

पेट में दर्द, जलन, पेट से गैस पास होना, डकारें आना, छाती में जलन, अफारा आदि। इसके अलावा जी मिचलाना, खाना खाने के बाद पेट ज्यादा भारी लगना और खाना हजम न होना, भूख कम लगना, पेट भारी-भारी रहना और पेट साफ न होने जैसा महसूस होना।

क्यों बनती है गैस

खानपान से-शराब पीने से, मिर्च-मसाला, तली-भुनी चीजें ज्यादा खाने से। बींस, राजमा, छोले, लोबिया, मोठ, उड़द की दाल, फास्ट फूड, ब्रेड और किसी-किसी को दूध या भूख से ज्यादा खाने से। खाने के साथ कोल्ड ड्रिंक लेने से। इसमें गैसीय तत्व होते हैं। तला या बासी खाने से।

लाइफ स्टाइल गलत जीवन शैली से- तनावग्रस्त रहना, देर से सोना और सुबह देर से जागना। खाने-पीने का समय निश्चित न होना।

अन्य कारण- लीवर में सूजन, गॉल ब्लेडर में पथरी, फैटी लीवर, अल्सर या मोटापे से। डायबीटीज, अस्थमा या बच्चों के पेट में कीड़ों की वजह से। अक्सर पेनकिलर खाने से। कब्ज, अतिसार, अपच व उलटी की वजह से।

घरेलू उपाय-

●एक मुनक्के का बीज निकालकर उसमें मूंग की दाल के एक दाने के बराबर हींग या लहसुन की एक छिली कली रखकर मुनक्के को बंद कर लें। इसे सुबह खाली पेट पानी से निगल लें। इसके 20-25 मिनट बाद तक कुछ न खाएं। तीन दिन लगातार ऐसा करें।

●अजवायन, जीरा, छोटी हरड़ और काला नमक बराबर मात्रा में पीस लें। बड़ों के लिए दो से छह ग्राम, खाने के तुरंत बाद पानी से लें। बच्चों के लिए मात्रा कम कर दें।

●पांच ग्राम हल्दी या अजवायन और तीन ग्राम नमक मिलाकर पानी से लें।

●दो लौंग चूस लें या उन्हें उबालकर उस पानी को पी लें।

●पानी में 10-12 ग्राम पुदीने का रस और 10 ग्राम शहद मिलाकर लें।

●खाना खाने के बाद 25 ग्राम गुड़ खाने से गैस नहीं बनती और आंतें मजबूत रहती हैं।

●बिना दूध की नींबू की चाय भी लाभ करती है, पर नींबू की बूंदें चाय बनाने के बाद ही डालें। इसमें चीनी की जगह हल्का.सा काला नमक डाल लें, लाभ होगा।

●बेल का चूर्ण, त्रिफला और कुटकी मिलाकर (दो से छः ग्राम) रात को खाना खाने के बाद पानी से लें।

●लहसुन की एक-दो कलियों के बारीक टुकड़े काटकर थोड़ा सा काला नमक और नींबू की बूंदें डालकर गर्म पानी से सुबह खाली पेट निगल लें। इससे कॉलेस्ट्रॉल, एंजाइना और आंतों की टीबी आदि बीमारियां ठीक होने में भी मदद मिलेगी। गर्मियों में एक-दो और सर्दियों में दो-तीन कलियां लें।

●गैस बनने पर हींग, जीरा, अजवायन और काला नमक, बहुत कम मात्रा में नौसादर मिलाकर गुनगुने पानी से लें। इनमें से कोई एक चीज भी ले सकते हैं।

●आधे कच्चे, आधे भुने जीरे को कूट कर गर्म पानी से दो ग्राम लें। ऐसा दिन में दो बार एक सप्ताह तक करें। इसके बाद मोटी सौंफ को भून-पीसकर गुड़ के साथ मिक्स करके 6-6 ग्राम के लड्डू बना लें। दिन में दो-तीन बार लड्डू चूसें।

●हर बार खाने के साथ अजवायन भी खाएं तो पाचन बढ़िया होगा। खाने में सादा के साथ-साथ काला नमक भी इस्तेमाल करें।

क्या खाएं

●फ्रूट और सब्जियां ज्यादा से ज्यादा खाएं। सब्जियों को

ज्यादा तलें नहीं।

●साबुत की बजाय धुली व छिलके वाली दालें खाएं।

●सोयाबीन की बड़ियां खाएं।

●दही व लस्सी का प्रयोग करें।

●नीबू-पानी-सोडा, नारियल पानी, शिकंजी या बेल का शर्बत पीना अच्छा है।

●आइसक्रीम और ठंडा दूध ले सकते हैं।

●बादाम व किशमिश लें, पर काजू कम मात्रा में लें।

●सौंफ, हींग, अदरक, अजवायन व पुदीने का प्रयोग करना अच्छा है।

●मोटा चावल खाएं। यह कम गैस बनाता है, जबकि पॉलिश वाला चावल ज्यादा गैस बनाता है। पुलाव के बजाय चावल उबालकर खाएं।

●खाना सरसों के तेल में पकाएं। देसी घी भी ठीक है, लेकिन मात्रा सीमित रखें। वनस्पति घी और रिफाइंड से बचें।

इनसे बचें

●तेल-मक्खन व क्रीम आदि ज्यादा न लें।

●मैदे और रिफाइंड आटे से बनी चीजें और बेकरी प्रॉडक्ट जैसे कुलचे, पूरी, ब्रेड पकौड़ा, छोले-भटूरे, परांठे, बंस, बिस्कुट, पैटीज, बर्गर व फैन आदि न खाएं।

●नमकीन, भुजिया, मट्ठी न खाएं।

●चना, राजमा, उड़द व मटर आदि का प्रयोग कम करें। इन्हें बनाने से पहले भिगो लें। जिस पानी में भिगोएं, उसको इस्तेमाल करके के बजाय फेंक दें।

●चाय-कॉफी ज्यादा न पीएं। खाली पेट चाय पीने से भी गैस बनती है।

●गर्म दूध भी गैस बनाता है। अल्सर वाले ठंडा दूध लें।

●सॉफ्ट-ड्रिंक्स या कोल्ड-ड्रिंक्स न पीएं।

●मोटी इलायची, तेजपत्ता, लौंग, जावित्री, जायफल आदि साबुत मसाले तेज गंध होने से पेट को नुकसान पहुंचाकर गैस की वजह बनते हैं। इन्हें पीसकर और कम मात्रा में लें।

●राजमा, छोले, उड़द, लोबिया या साबुत दालों से गैस बन सकती है।

●अरबी-भिंडी और राजमा से परहेज रखें।

●कच्चा लहसुन, कच्चा प्याज व अदरक भी गैस बनाता है।

●मूली-खीरे आदि से गैस की शिकायत हो तो उनका परहेज करें।

●अगर खाने का ज्यादातर हिस्सा फैट या कार्बोहाइड्रेट से आता है यानी रोटी, आटा व बेसन आदि ज्यादा खाते हैं तो गैस ज्यादा बनेगी।

●संतरा व मौसमी आदि एसिडिक फलों के रस से गैस बनती है। जूस के बजाय ताजे फल खाएं।

●खाली पेट दूध पीने और खाली पेट फल खासकर सेब और पपीता खाने से गैस बनती है।

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर में प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल झज्जर युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती व स्वामी ओमानन्द के सपनों को साकार करने हेतु मानव निर्माण, आर्यों का तीर्थ एवं प्रेरणा स्थल तथा वैदिक शिक्षा के आदर्श केन्द्र के रूप में अहर्निश संलग्न है। अतः रोग, नशा, अज्ञान, अन्याय, भय-भ्रम, पाखण्ड, दुराचार, भ्रष्टाचार मुक्त योग अध्यात्म विद्या, स्वास्थ्य, समृद्धि, सद्ज्ञान एवं वैदिक संस्कारों से युक्त त्यागी तपस्वी, ईश्वर, माता-पिता, गुरु, गौ व राष्ट्रभक्त, सदाचारी, संस्कारवान् दिव्य सन्तान निर्माण के लिए अपने बालकों को गुरुकुल झज्जर में प्रवेश दिलाने हेतु शीघ्रातिशीघ्र सम्पर्क करें।

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर में प्रवेश के नियम

१ विद्यार्थी पाँचवीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। २ प्रवेश हेतु लिखित एवं मौखिक परीक्षा अप्रैल, मई व जून माह के प्रथम व तीसरे रविवार को होगी। ३ लिखित परीक्षा के उपरान्त उसी दिन मौखिक परीक्षा होगी और दोनों परीक्षाओं के आधार पर विद्यार्थी का प्रवेश होगा। ४ विद्यार्थी स्वस्थ, सुशील, सुयोग्य और अनुशासित होना अनिवार्य है। ५- अधिक जानकारी के लिए गुरुकुल नियमावली कार्यालय से प्राप्त करें या चलभाष से सम्पर्क करें।

सम्पर्क सूत्र : 094160 55044, 09416126977, 94166 61019, 9729192992

ई मेल : sudharak.gurukul@gmail.com

ओ३म्

(प्राचीन व आधुनिक शिक्षा का उत्तम सामंजस्य केन्द्र)

गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत, रोहतक (हरियाणा)

GURUKUL BHAIYAPUR LADHOT, ROHTAK

(Affiliated with C.B.S.E. New Delhi Code No. 531114)

गुरुकुल में उपलब्ध सुविधाएं एवं आवश्यक निर्देश

- ★ लिखित परीक्षा द्वारा 6 अप्रैल को मैरिट के आधार पर प्रवेश। नियमावली उपलब्ध है।
- ★ प्रविष्ट छात्रों का हॉस्टल में रहना आवश्यक है।
- ★ संध्या-हवन, योगासन, प्राणायाम खेल समन्वित नियमित दिनचर्या और धर्म शिक्षा द्वारा संस्कारित वातावरण।
- ★ सी.बी.एस.ई. बोर्ड नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त (मान्यता क्रमांक 531114) है।
- ★ इंग्लिश मीडियम (अंग्रेजी माध्यम)।
- ★ 10+1, 10+2 में आर्ट, कॉमर्स तथा नॉन मैडिकल संकाय।
- ★ आर्मी, नेवी तथा एयरफोर्स के लिए भर्ती में प्रशिक्षण।
- ★ सी.सी.टी.वी. कैमरों की व्यवस्था।
- ★ पुस्तकालय, वाचनालय, कम्प्यूटर तथा विज्ञान की आधुनिक प्रयोगशालाएं।
- ★ इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स के लिए भाषा प्रयोगशाला।
- ★ शुद्ध जल का निजी प्रबन्ध।
- ★ संस्था में स्थापित पं० रामप्रसाद बिस्मिल खेल अकादमी के माध्यम से खेल प्रशिक्षण। प्रशिक्षित कोचों एवं अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों द्वारा समय-समय पर दिशा निर्देश।
- ★ शुद्ध दूध के लिए निजी गोशाला।
- ★ 6 एकड़ का स्वच्छ तथा रमणीय परिसर।
- ★ स्टेशनरी तथा खाद्य पदार्थों के लिए कैन्टीन तथा वस्तु भण्डार की सुविधा।

3 K.M. STONE FROM BUS STAND, LADHOT ROAD, ROHTAK (HARYANA)

Contact : 01262-217550, 09992403892, 09467240298, 09416629972

जानते हो?

❒हर्षित सोनी

☯प्रथम कृत्रिम उपग्रह स्पूतनिक, ४ अक्तूबर, १९५७ को अंतरिक्ष में भेजा गया।

☯विश्व की प्रथम महिला अन्तरिक्ष यात्री वैलेन्तीना तैरेस्कोवा कौन थी।

☯अंतरिक्ष में पहले पहल जाने वाला जानवर लाइका नामक कुतिया थी। ३ नवंबर १९५७

☯पृथ्वी पर पांच हजार से अधिक भाषाएँ बोली जाती हैं। हृदय दिन में एक लाख से भी अधिक बार धड़कता है।

☯चींटियाँ सोती नहीं हैं।

☯गैंडे का सींग, हड्डी नहीं होता, यह एक बाल होता है।

☯दक्षिण कोरिया का स्वतंत्रता दिवस भी १५ अगस्त को मनाया जाता है।

☯दक्षिणी अमरीका के अटाकाम रेगिस्तान में कभी वर्षा नहीं होती।

☯शरीर का विकास एक खास आयु में आकर रुक जाता है, पर कानों का आकार बूढ़े होने पर भी बढ़ता रहता है।

हास्यम्

: प्रतीक सोनी, मानव

❖सोहन –मुझे तुम से मिलकर बहुत खुशी हुई। क्या तुम मुझे १०० रुपये उधार दे सकते हो?

मोहन– इस समय यहाँ तो मेरे पास पैसे नहीं है।

सोहन– और घर पर?

मोहन– ओह! घर पर–! सब राजी खुशी हैं, धन्यवाद!

❖गोलू ने हलवाई की दुकान से एक रसगुल्ला उठा लिया। हलवाई उससे रसगुल्ला छीनने की कोशिश करने लगा। गोलू ने उसे झट अपने मुंह में डाल लिया और बोला– अब तो खुश हो न! न तुम्हारे हाथ लगा न मेरे।

❖सोनू – डॉक्टर साहब जब मैं सोकर उठता हूँ तो आधे घंटे तक मुझे खूब चक्कर आते हैं।

डॉक्टर– (सोचकर) तब तो तुम्हें आधे घंटे बाद उठना चाहिए।

❖'क्या हुआ बहन इतनी परेशान क्यों हो?'

'मुन्ने ने पांच रुपये का सिक्का निगल लिया है।'

'निगलने दो, आजकल पांच रुपये का आता ही क्या है?'

❖एक पागल– कहाँ तक पढ़े हो?

दूसरा– एम० ए० तक –– पर सोचता हूँ कि अब मैट्रिक भी कर ही डालूँ।

❖माता– बेटा क्यों रो रहे हो?

बेटा– मां, मैं कल स्कूल के मैदान में गिर गया था।

माता– तो आज क्यों रो रहे हो?

बेटा– तब समय नहीं मिला था।

प्रहेलिकाः

❒आस्था आर्या

❖पकड़ नाक वह कान चढ़े।
वश में उसके बड़े बड़े।।

❖हाथ बांधकर चलती साथ,
सतत काम करती दिन रात।

❖दो ने दोनों पकड़े पांव
चले साथ में अगले ठांव।।

❖करे साफ चेहरा व हाथ,
रहे जेब में हरदम साथ।

❖लग लग कहे तो ना लगे
मत लग कहे तो लग जाए।

❖बाल बिखेरे फिरती घर में
करे सफाई सारे नगर में।

❖काजल जैसा काला है, इसीलिए शरमाता है
देखे जब प्यासी धरती आंसू खूब बहाता है।

❖एक तरफ लटका रहता है, ना पीता ना खाता है।
साल महीने दिन छुट्टी के, सब कुछ हमें बताता है।।

ऐनक, घड़ी, जूती, रुमाल, होंठ, झाड़ू, बादल, कलेण्डर

विचार कणिकाः

❒प्रतिभा

◆मानव का दानव होना उसकी हार है, महामानव होना चमत्कार और मनुष्य होना उसकी जीत है। –डॉ० राधाकृष्णन्

◆सच्चा प्रेम पवित्रता है और पवित्रता प्रेम– स्वामी रामतीर्थ

◆विनम्रता समस्त गुणों की आधारशिला है। –कन्फ्यूशियस

◆संसार में सभी वस्तुओं में विद्या सबसे श्रेष्ठ है। न तो यह चुराई जा सकती और न ही प्रयोग करने पर नष्ट होती है।

◆यदि तुम सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने के आकांक्षी हो तो सबसे नीचे से चढ़ना शुरू करो। –साइरस

◆कर्त्तव्य और वर्त्तमान हमारा है, फल और भविष्य ईश्वर का है– होरेस ग्रेले

◆थोड़ा दोष अतिशय उपकार का नाश नहीं करता– भारवि

◆निराशा निर्बलता का चिह्न है।– स्वामी रामतीर्थ

◆वक्त सबसे अधिक बुद्धिमान परामर्शदाता है। –पेरीक्लीन

हास्य-कथा

गुठली

❑आदित्य प्रकाश

वह सितम्बर महीने की ३० तारीख थी। शाम को ५ बजे पापा के ड्यूटी से आते ही मम्मी ने उनसे थैला लिया और अपनी देखरेख में ड्राईंग रूम के ऊपर वाली स्लैब पर रख दिया। महीने का आखिरी दिन था और इसी दिन पापा को सैलरी मिलती थी। हम तीनों भाईयों को पूरा विश्वास था कि पापा आज खाने के लिए कुछ अच्छा ही लाए होंगे। अब तक का मेरा अनुभव था कि कोई भी वस्तु खाते वक्त हमें इतना उत्साहित नहीं करती जितना उसका इन्तजार उत्साहित करता है। मम्मी खाना शाम को करीब ८ बजे बनाती है; अत: ५ से ८ लेकर बजे तक उन तीन घण्टों का इंतजार हमें अत्यधिक उत्साह व जिज्ञासा से भर रहा था।

मेरे परिवार में मैं बीच का हूँ। बड़े भईया तो खेल में मस्त रहते हैं, छोटे हर्षित को सबका कहना मानना पड़ता है; और उस दिन तो पापा ने मम्मी को सख्त हिदायत दी थी कि मेरे बगैर थैले को किसी ने नहीं खोलना है। मैं या हर्षित जब भी थैले की तरफ हाथ बढ़ाते तो माँ आंखें निकाल कर व उँगली को उठाकर चेतावनी दे देती-'पापा को बताऊँगी तो वे बहुत पिटाई करेंगे।'

बड़े भईया तो खेल में मस्त थे, मैंने भी परिस्थिति से समझौता कर लिया और अपने काम में लग गया। खैर धीरे-२ समय बीतता गया और खाने का समय नजदीक आता गया। हम सभी नीचे दरी पर बैठे थे, पापा ने थैले में से एक डिब्बा निकाला और उसे खोला।

वाह! गुलाब जामुन। बडे भाई के मुँह से निकला और एक लार मुँह से निकल कर नीचे गिर पड़ी। पापा उन गुलाब जामुनों को ध्यान से देख रहे थे। उन्होंने धीरे से कहा-'इनमें से दो गुलाब जामुन कम हैं।' मैंने अपना सिर नीचे कर लिया, कहीं पापा मेरे ऊपर ही शक न कर लें। माँ रसोई में थी।

अचानक पापा ने विचारमग्न मुद्रा में कहा-देखो बच्चो, तुम तीनों में से किसी ने दो गुलाब जामुन खाए हैं, कोई बात नहीं, खाने की वस्तु तो खाने के लिए ही होती है, लेकिन एक बात मैं पहले बताना भूल गया कि इसमें एक मुलायम गुठली होती है, अगर इसे न निकाला जाए तो पेट में गुठली उग जाने का भय रहता है, पेट में दर्द रहता है और डॉक्टर के पास जाना पड़ता है।

मैं देख रहा था- बड़े भईया अपनी जगह पर स्थिर थे, छोटा हर्षित दिखाई नहीं दे रहा था। वह उठकर रसोई में मम्मी के पास कब चला गया, पता ही नहीं चला। मैंने देखा- उसकी आंखों में आँसू थे। उसने रोते हुए मम्मी को धीरे से बताया कि गुलाब जामुन उसने ही खाए थे और गुठली उसे मीठी लगी, इसलिए उसे भी साथ ही खा गया। अब उसे पेट में दर्द और डॉक्टर के पास जाने की चिन्ता सता रही थी। मम्मी ने सारी बात सुनकर सबके बीच में बताई तो पापा और बड़े भईया ठहाका मार कर हँस पड़े।

बाद में पता चला कि दरअसल गुलाब-जामुन में गुठली होती ही नहीं। हर्षित जो गुठली समझकर खा गया था वास्तव में वह 'किसमिस' थी। हलवाई गुलाब-जामुन बनाते समय उनके बीच में एक पीस 'किसमिस' का रख देते हैं, जो खाने में स्वादिष्ट होती है।

मेरे लिए वह दिन बहुत यादगार था, जब शालीनता पूर्ण तरीके से एक चोर पकड़ा गया।

आदित्य 'प्रकाश' पुत्र श्री रविन्द्र आर्य
कक्षा-६, इंडस पब्लिक स्कूल, जीन्द-१२६१०२
मो० 98968 12152

प्रेरक प्रसंग

प्रस्तुति : **रवीश सोनी**

मन की जंजीरें

एक व्यक्ति तीर्थ यात्रा पर जा रहा था। मार्ग में उसने सड़क के किनारे बंधे कुछ हाथियों को देखा और वह रुक गया। उसने देखा कि हाथियों के अगले पैर में एक रस्सी बंधी हुई है। उसे इस बात पर आश्चर्य हुआ कि हाथी जैसे विशालकाय जीव लोहे की जंजीरों की जगह बस एक छोटी सी रस्सी से बंधे हुए हैं।

वे चाहते तो खुद को आजाद कर सकते थे, पर वे ऐसा नहीं कर रहे थे। उसने पास खड़े महावत से पूछा- 'भला ये हाथी किस प्रकार इतनी शांति से खड़े हैं और भागने का प्रयास भी नहीं कर रहे हैं।'

महावत ने कहा- 'इन हाथियों को छोटी उम्र से ही इन रस्सियों से बांधा जाता है। उस समय इनके पास इतनी शक्ति नहीं होती कि इस बंधन को तोड़ सकें। बार-बार प्रयास करने पर भी रस्सी न तोड़ पाने के कारण उन्हें धीरे-धीरे यकीन होता जाता है कि वे इन रस्सियों को नहीं तोड़ सकते और बड़े होने पर भी उनका यह यकीन बना रहता है। इसीलिए वे कभी इसे तोड़ने का प्रयास ही नहीं करते।'

उस यात्री को यह बात बड़ी रोचक लगी। उसने इसके बारे में एक संत से चर्चा की। संत ने मुस्कराकर कहा- 'ये जानवर इसलिए अपना बंधन नहीं तोड़ सकते क्योंकि वे इस बात में यकीन करते हैं। दरअसल कई इंसान भी इन्हीं हाथियों की तरह अपनी किसी एक विफलता के कारण यह मान बैठते हैं कि अब उनसे यह काम हो ही नहीं सकता। वे अपनी बनाई हुई मानसिक जंजीरों में पूरा जीवन गुजार देते हैं, लेकिन मनुष्य को कभी प्रयास छोड़ना नहीं चाहिए। लगातार प्रयास से ही सफलता मिलती है।

पश्चात्ताप

कर्णवास का एक पंडित महर्षि दयानंद सरस्वती को प्रतिदिन गालियाँ दिया करता था, पर महर्षि शांत भाव से उन्हें सुनते रहते और उसे कुछ भी उत्तर न देते। एक दिन वह गाली देने नहीं आया। महर्षि ने लोगों से उसके न आने का कारण पूछा। लोगों ने बताया- 'वह बीमार है।'

महर्षि फल और औषधि लेकर उसके घर पहुँचे। वह महर्षि को देखकर उनके चरणों में गिर पड़ा और अपने असद् व्यवहार के लिए क्षमा माँगने लगा। इसके बाद उसका गाली देना सदा के लिए छूट गया।

खिचड़ी

प्रस्तुति : **सारा अग्रवाल**

दादी, आज बनाई खिचड़ी
गरम गरम मैं लाई हूँ।
सबसे पहले तुझे खिलाऊँ,
दौड़ी दौड़ी आई हूँ।।

तेरा हाथ न जलने पाए,
थाली में फैलाई है।
जल्दी ही ठण्डी हो जाए,
यह तरकीब लगाई है।।

ला, अब मैं अपने हाथों से,
खिचड़ी तुम्हें खिलाती हूँ।

तेरा मुंह न जलेगा बिल्कुल,
गाना तुझे सुनाती हूँ।।

मैं नन्हीं थी मुझे गोद में,
लेकर तू भी गाती थी।
ठंडी कर अपने हाथों से,
खिचड़ी मुझे खिलाती थी।।

तूने खूब खिलाई खिचड़ी,
अब मैं तुझे खिलाती हूँ।
खा लो इसे बची थोड़ी सी,
फिर अम्मा से लाती हूँ।।

-सुपुत्री श्री संजीव कुमार, कक्षा दस, डी ए वी स्कूल जींद

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली में बेटी बचाओ महायज्ञ

कन्या भ्रूणहत्या के लिए दोषी मशीन नहीं मानव की मानसिकता है -स्वामी आर्यवेश

एक तरफ हम हजारों वर्षों की शानदार सांस्कृतिक विरासत की दावेदारी करते हैं, समाज और संस्कृति में स्त्री के स्थान, योगदान और महत्व का गुणगान करते भी नही थकते, तब हमारे समय में बच्चियों की जन्म दर में आई इस भयावह गिरावट ने क्या हमारे समाज की भीतरी सच्चाई को खोलकर नहीं रख दिया है। ये शब्द सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने बेटी बचाओ महायज्ञ के पांचवें दिन कहे। उन्होंने कहा कि पिछली तमाम जनगणनाओं में लिंगानुपात में बेटी का प्रतिशत घटता चला गया है, जो अब हाल की जनगणना में डरावने स्तर पर जा चुका है। हर कोई जानता है कि यह कोख में ही बच्चे के लिंग की जाँच करवा लेने और यदि भ्रूण कन्या का हुआ तो उसकी हत्या कर देने की कुप्रवृत्ति के चलते हुआ है। यह बहुत ही घातक है। जरुरी तो यह साबित करना है कि विज्ञान अंतत: भलाई के लिए ही है। घातक तो वह प्रवृत्ति है जो निहित स्वार्थ के लिए आविष्कारों की उपलब्धियों का दुरुपयोग करती है। जरुरी तो यह है कि हम वैज्ञानिक खोजों का विरोध न करें बल्कि उन मानसिक प्रवृत्तियों की तलाश और पहचान करें जो इनका दुरुपयोग संभव करती हैं। दोषी मशीन नहीं बल्कि मानव की मानसिकता है। आश्रम के ब्रह्मचारियों ने गीत प्रस्तुत किये तथा पूनम कुमारी ने कन्या बचाओ पर कविता सुनाई। बेटी बचाओ अभियान की प्रधान बहन पूनम आर्या, संयोजक बहन प्रवेश आर्या, उर्मिल राठी, रणबीर राठी, राजबीर, जिले सिंह, कृष्ण प्रजापत, राजकिशोर शास्त्री, वीरेंद्र शास्त्री, डॉ. महावीर, सोनू आर्य, सुशीला, कृष्णा, नीलम, पूनम, राहुल, राजेन्द्र, शांति, सरोज, ओम्पति, रश्मि आदि ने भी आहुति डाली।

प्रवेश आर्या 9416630916

जींद में मनाई गई महर्षि दयानन्द जयन्ती

कहने की बजाय कुछ करने की भावना रखें -सुन्दर सिंह

महर्षि दयानन्द जयन्ती समारोह में संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि चौ. सुन्दरसिंह धर्मखेड़ी

जींद, आर्यसमाज जींद जंक्शन में महर्षि दयानन्द जयंती सभी स्थानीय आर्यसमाजों की ओर से मनाई गई। कार्यक्रम का प्रारंभ वैद्य दयाकृष्ण आर्य के ब्रह्मत्व में यज्ञ से हुआ। भजनोपदेशक पण्डित रामेश्वरदत्त आर्य व सुनील शास्त्री ने स्वामी दयानन्द से संबंधित मधुर भजन प्रस्तुत किये। मुख्य वक्ता प्रो. ओमकुमार आर्य ने कहा कि वास्तविक अर्थों में बेटी बचाओ अभियान की शुरुआत महर्षि दयानन्द ने की थी। स्वामी दयानन्द ने उस समय नारियों की पैरवी की जब उनकी आवाज उठाने वाला भी कोई नहीं था। समारोह के मुख्य अतिथि चौधरी सुन्दरसिंह धर्मखेड़ी ने अपने वक्तव्य में कहा कि यदि हमें अपने जीवन में सुख व सफलता चाहिए तो हमें महर्षि दयानन्द का अनुसरण करना होगा। स्वामी दयानन्द की प्रेरणा यही है कि हमें कहने की बजाय समाज के लिए कुछ करने की भावना रखनी चाहिए। अपना इतिहास पढ़ने का तभी लाभ होगा जब हम कुछ अच्छे कार्य करके नये इतिहास का निर्माण करें। कार्यक्रम के संयोजक सहदेव शास्त्री ने मंच संचालन किया। प्रधान मा. सतबीर जुलानी, मंत्री मा. पृथीसिंह मोर, कोषाध्यक्ष महासिंह आर्य, अश्विनीकुमार आर्य, जयदेव आर्य, डॉ. बलबीर आर्य, डा. शिवप्रकाश व सभी सदस्यों ने पूरी व्यवस्था व अतिथियों का धन्यवाद किया।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का 112 वाँ दीक्षान्त समारोह सम्पन्न

शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के जीवन व व्यक्तित्व का समग्र विकास है : राजनाथ सिंह

मनमोहन कुमार आर्य (09412985121)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार का 112 वां वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास से आज 6 फरवरी 2015 को सम्पन्न हुआ। मंच पर ही यज्ञ किया गया जिसमें विवि के कुलाधिपति डॉ. राम प्रकाश, कुलपति प्रो. सुरेन्द्र कुमार, एमडीएच के प्रमुख महाशय धर्मपाल जी सहित अनेक लोग सम्मिलित हुए। मुख्य अतिथि भारत के गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह जी थे। बीजेपी सासंद श्री रमेश पोखरियाल व हरिद्वार से विधायक मदन कौशिक भी पधारे। विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय द्वारा विगत वर्षों की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। माननीय गृहमंत्री श्री राजनाथसिंह को विवि की उच्चतम मानोपाधि विद्यामार्तण्ड से भी सम्मानित किया गया।

दीक्षान्त भाषण देते हुए भारत के गृहमन्त्री श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि इस स्थान पर अपनी उपस्थिति को मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ। गुरुकुल ने अपने स्थापना काल से अनेक सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वानों को पैदा किया है। उन्होंने कहा कि दीक्षा संस्कार का प्रभावी माध्यम है। ज्ञान अपने आप में पर्याप्त नहीं है। ज्ञान जब अच्छे संस्कारों से जुड़ जाता है तो यह लाभकारी बन जाता है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि स्नातक विद्यार्थी गुरुकुल में प्राप्त शिक्षा एवं संस्कारों का अपने सारे जीवन भर अनुसरण करेंगे।

मुख्य अतिथि के भाषण के बाद कुलाधिपति श्री डॉ. राम प्रकाश ने श्री राजनाथ सिंह के गुणों की प्रशंसा की और उनको समस्त गुरुकुल के अधिकारियों, शिक्षकों की ओर से धन्यवाद किया। राष्ट्रीय गान के साथ दीक्षान्त समारोह का समापन हुआ।

भारतीय संस्कृति का दर्शन कर गदगद हुए विदेशी छात्र

विनोद बंसल, मिडिया प्रमुख, विहिप दिल्ली

हिन्दु हैरिटेज फाउण्डेशन के द्वारा 27 फरवरी से 01 मार्च तक 'माँ-गंगा' के किनारे पर 15वीं हैरिटेज सेमीनार का आयोजन किया गया जिसमें जापान, कोरिया, रूस, चीन, नुरो (दक्षिणी अफरीका) उज्बेकिस्तान, कजाकिस्तान, रोमानिया सहित 09 देशों से आए हुए छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। भारतीय संस्कृति, संस्कार तथा हिन्दी को बढ़ावा देने हेतु उन्हें परमार्थ आश्रम ऋषिकेश के स्वामी चिदानन्द जी, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार के योग गुरु बाबा राम देव जी, आयुर्वेदाचार्य आचार्य बालकृष्ण जी, गायत्री परिवार के प्रमुख डॉ. प्रणव पांण्डया जी, विहिप के अंतर्राष्ट्रीय सयुंक्त महासचिव स्वामी विज्ञानानन्द जी व केन्द्रीय मंत्री श्री प्रशान्त हरतालकर सहित अनेक गणमान्यों ने मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद दिया। हिन्दू हैरिटेज फाउण्डेशन के सचिव श्री संजीव साहनी व सहयोगी श्री अजय कुमार के विशेष प्रयासों तथा विहिप के अनेक कार्यकर्ताओं की अनवरत मेहनत ने विदेशों से पधारे इन युवाओं के मन में भारत और उसकी उच्च संस्कृति का वह मानचित्र बना दिया जिसे उनमें से शायद ही कोई अपने जीवन काल में भुला पाएगा। फाउण्डेशन के विशेष सहयोग से केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, दिल्ली द्वारा प्रति वर्ष लगभग चार हजार विदेशी छात्रों को हिन्दी का व्यावहारिक ज्ञान दिया जाता है। भारतीय संस्कृति, इतिहास, महा पुरुष, त्योहार व दर्शन के साथ-साथ समृद्ध भारतीय जीवन मूल्यों से भी प्रगाढ़ रूप से जोड़ा जाता है। गत 18 वर्षों में लगभग 40 देशों के हजारों छात्रों को इस कार्यक्रम से जोड़ा जा चुका है।

तिनके का सहारा -- पृष्ठ २३ का शेष

सरकार ने बनाये हैं। तुम्हारा पति यदि तुम्हें तंग करता है तो तुम उनसे सहायता ले सकती हो।'

जगतारी बोली, 'अरे बीबी जी! हमारे लिये कहाँ का कानून और कैसी सहायता? किसी से भला किसकी शिकायत करूं? अब घर में कम से कम एक मर्द तो है जिसकी ओट सदैव बनी रहती है। एक बार मेरे पति ने मुझे डण्डों से पीटा था। शरीर में जगह-२ निशान पड़ गये थे। उस समय गांव के सरपंच ने इनकी शिकायत थाने में कर दी थी तो मैंने ही जाकर इन्हें छुड़वाया था। क्या करती? यह निर्दयी हो सकता था, परन्तु मैं तो ऐसा नहीं कर सकती कि इसे तड़पता देखूं। जब थाने गई तो पुलिस वाले भी उल्टा मुझे ही डांटने लगे। मान लो यदि इसको सजा हो जाती, हम भला किस कानून के सहारे रहते? कौन सा आयोग आकर हमारे घर में रोटी दे जाता? ये कानून वानून सब अमीरों की भरी जेबों से चलता है। हम गरीबों का तो भगवान ही रक्षक है। चाहे मेरा पति शराबी और निकम्मा ही क्यों न हो, भले ही मारपीट भी करता है परन्तु है तो मेरा सहारा। भगवान न करे कल को इसे कुछ हो जाये तो मैं भला कहाँ जाऊँगी? यह दुनियां गिद्धों से भरी हुई है, जो मांस को नोचने के लिये ताक लगाये बैठे रहते हैं। कहते हैं ना! डूबते को तिनके का सहारा ही बहुत होता है। मेरा पति तो फिर जीता जागता मनुष्य है।'

थोड़ी देर में वर्षा रुक गई तो जगतारी देवी अपने बच्चों के साथ चली गई और भोजन बनाने हेतु लकड़ी का गट्ठर भी उठा ले गई। मेरी पत्नी ने कुछ गर्म वस्त्र, पुराने परन्तु पहनने योग्य, उसे दे दिये तो वह धन्यवाद करती हुई गई। उसके जाने के उपरान्त मेरे सामने दो समानान्तर रेखायें खड़ी थीं, जिसमें एक ओर सरकारी योजनायें, कानून एवं आयोग थे और दूसरी ओर जगतारी देवी और उसका समाज खड़ा था। मैं निर्णय नहीं कर पा रहा था कि कौन सी पंक्ति बड़ी है और क्यों?

फार्म - IV
(देखिए नियम-8)

प्रकाशन का नाम : शांतिधर्मी
प्रकाशन का स्थान : जीन्द (हरियाणा)
प्रकाशन की अवधि : मासिक
मुद्रक का नाम : सहदेव
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : 756/3, आदर्श नगर,सुभाष चौक (पटियाला चौक) जीन्द
प्रकाशक का नाम : सहदेव
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : 756/3, आदर्श नगर,सुभाष चौक (पटियाला चौक) जीन्द
सम्पादक का नाम : सहदेव
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : 756/3, आदर्श नगर,सुभाष चौक (पटियाला चौक) जीन्द

उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र की कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हैं।

सहदेव
756/3, आदर्श नगर,
सुभाष चौक (पटियाला चौक) जीन्द

मैं सहदेव एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त प्रविष्ठियां मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास से सत्य हैं।

सहदेव
प्रकाशक के हस्ताक्षर

चुनाव सूचना

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द पार्क, नारंग कॉलोनी-कन्हैया नगर, त्रिनगर, दिल्ली-35 की कार्यकारिणी का चुनाव सर्वसम्मति से इस प्रकार सम्पन्न हुआ-**संरक्षक** -आर्य राजेन्द्र जी, **प्रधान**- आर्य रामनारायण मित्तल जी, **मन्त्री**- आर्य राधेश्याम जी, **कोषाध्यक्ष**- आर्य प्रदीप जी, **प्रचार मन्त्री**-आर्य हर्षवर्धन जी, **आर्य वीर दल अधिष्ठाता**-आर्य राजीव गोयल जी।

महाशय तेजवीर आर्य का फोन नं० बदला

आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध युवा भजनोपदेशक महाशय तेजवीर आर्य, पानीपत (सुपौत्र स्व० वैद्य मंगलदेव जी) का फोन नं० बदल गया है। भविष्य में प्रचार आदि के लिए उनसे चलभाष 98130 55365 पर सम्पर्क करें।

महाशय तेजवीर आर्य भजनोपदेशक
अर्जुन नगर (निकट अमित पब्लिक स्कूल)
काबड़ी रोड, पानीपत

योगाचार्य स्वामी रामवेश जी की अध्यक्षता में

ध्यान प्राणायाम योग चिकित्सा शिविर

८ अप्रैल से १२ अप्रैल २०१५
प्रात: ५:३० से ७:३०

आसन, प्राणायाम, ध्यान आदि योग की गूढ़ विधियों द्वारा नजला, जुकाम, अस्थमा, मोटापा, एलर्जी, सवाइकल, कमर दर्द, साइटिका, गैस कब्ज, एसिडिटी, मधुमेह, तनाव, ब्लडप्रैशर आदि असाध्य रोगों की निवृत्ति के लिए आप शिविर में सादर आमंत्रित हैं।

सम्पर्क सूत्र एवं शिविर स्थल
महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम
३७०५, अर्बन एस्टेट, जींद
दूरभाष : ०१६८१-२४८६३८, ९४१६१४८२७८

वेद का धर्म-- पृष्ठ १४ का शेष

के अनुसार किसी एक वर्ण में दीक्षित होकर उसके कार्यों के द्वारा राष्ट्र की सेवा का व्रत लेगा। गृहस्थाश्रम में सभी अपने-अपने वर्णों के कार्यों के द्वारा राष्ट्र की सेवा का कार्य करेंगे। वानप्रस्थ में सम्पत्ति अर्जित करने का काम बन्द करके सब लोग साधना और आत्म-चिन्तन का काम करेंगे तथा गुरुकुलों में जाकर अपनी योग्यता के अनुसार राष्ट्र के बालकों को निःशुल्क शिक्षा देने का काम भी करेंगे। संन्यास आश्रम सब के लिए आवश्यक नहीं है। जो लोग ब्राह्मणवृत्ति के होंगे और जिनमें पूर्ण वैराग्य उत्पन्न हो जाएगा वे ही लोग संन्यास ले सकेंगे। ये संन्यासी लोग सारी धरती को अपना घर और उसके सब निवासियों को अपना कुटुम्ब समझेंगे। ये लोग मानव मात्र के कल्याण की कामना से सत्य और धर्म का उपदेश करते हुए धरती पर विचरण करेंगे। ये लोग पुत्रों की कामना, धन की कामना और यश की कामना से सर्वथा दूर रहेंगे। सब प्रकार के लोभ से दूर रहकर संन्यासी लोग प्रभु चिन्तन में मग्न रहेंगे और मानव समाज को सन्मार्ग दिखाने का काम करेंगे। धरती के लोग जब वर्णाश्रम व्यवस्था की पद्धति से अपना जीवन बिताने लगेंगे तो उनके जीवन में किसी प्रकार का अभाव और कष्ट नहीं रहेगा और उनके जीवन में आनन्द की गंगा बहने लगेगी।

त्याग का जीवनः-

वेद में त्याग के जीवन पर बहुत बल दिया गया है। एक स्थान पर वेद में कहा गया है कि जो व्यक्ति अपनी भोग सामग्री को अकेला ही खाता है, बांट कर नहीं खाता वह पाप ही खाता है। (ऋ० १०-११७-६) एक अन्य स्थान पर वेद कहता है कि ईश्वर इस जगत् में सर्वत्र व्याप्त है अतः वह सबके कामों को देख रहा है। इसलिए हे मनुष्य, तू त्यागपूर्वक पदार्थों का भोग कर, किसी की सम्पत्ति की ओर लोभ की दृष्टि से मत देख। (यजु० ४०-१) सब लोग यदि त्यागमय जीवन व्यतीत करने लग पड़ें तो किसी के पास भी धन सम्पत्ति का आवश्यकता से अधिक संग्रह नहीं होगा और इस कारण सबको अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक धन-सम्पत्ति उपलब्ध हो सकेगी। लोभ लालच की वृत्ति से व्यक्ति में जो अनेक बुराईयाँ आ जाती हैं तो उसे पतित कर देती हैं। उनसे भी त्याग का जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति बचा रहेगा तथा उसकी बुराईयों से समाज को कलुषित और पीड़ित नहीं होना पड़ेगा। ऊपर संकेतित वर्णाश्रम व्यवस्था की पद्धति व्यक्ति में त्याग की भावना को जगाने और बद्धमूल करने में बड़ी सहायक होती है।

ईश्वर एक हैः-

वेद का धर्म एकेश्वरवादी है। वह बहु देवतावादी नहीं है। बहुदेवता वाद के कारण मनुष्य में अनेक प्रकार के विवाद और झगड़े चलने लगते हैं। जिससें लोगों को भाँति-भाँति के कष्ट भोगने पड़ते हैं। एकेश्वरवाद के सिद्धांतों में यह न्यूनता नहीं रहेगी। इस सम्बन्ध में वेद कहता है- ईश्वर न दो हैं, न तीन न चार हैं, न पाँच हैं, न छह हैं, न सात हैं, न आठ हैं, न नौ हैं और न ही दस हैं। वह अकेला वर्तमान है, वह एक ही है। (अथर्व० १३-४-२) वेद में जो अग्नि और इन्द्र आदि नाम आते है वे किन्हीं पृथक्-पृथक् व्यक्तित्व और सत्ता रखने वाले देवताओं के नाम नहीं है। वे उसी एक ईश्वर के नाम हैं जो कि उसके भिन्न-भिन्न गुणों के कारण हैं। ऋग्वेद के १-१६४-४६ मन्त्र में तथा यजुर्वेद के ३२-१ मन्त्र में इसे भली-भाँति स्पष्ट कर दिया गया है। अन्य अनेक स्थलों पर भी वेद में इस बात को अति स्पष्ट कर दिया गया है। ईश्वर के स्वरूप के सम्बन्ध में भी वेद की मान्यता बहुत स्पष्ट है। वेद के अनुसार ईश्वर का शरीर नहीं, वह एकदेशी नहीं है, वह सर्वव्यापक है और उसमें कोई विकार नहीं है। वेद कहता है 'वह ईश्वर सर्वव्यापक है, ज्योतिस्वरूप है, उसका कोई शरीर नहीं है, इसीलिए उसमें कोई घाव नहीं हो सकता, और न ही उसमें नस- नाडियां हो सकती हैं। वह शुद्ध स्वरूप है, पाप उसको छू नहीं सकता, वह क्रांतदर्शी ज्ञानी है, मनन शक्ति से युक्त बुद्धिमान है। सर्वत्र विद्यमान है। उसका उत्पन्न करने वाला कोई नहीं है, वह स्वयं ही सदा से विद्यमान है, और वह अनादि काल से जगत् के पदार्थों को ठीक-ठीक निर्माण करता आ रहा है। (यजु० ४२-८) उसकी मूर्ति या प्रतिमा भी नहीं हो सकती, क्योंकि उसका कोई शरीर ही नहीं है। यजुर्वेद के ३२-२ मन्त्र में उसकी प्रतिमा होने का स्पष्ट निषेध किया गया है। ऐसे निराकार और सर्वव्यापक ईश्वर की उपासना का ही वेद में विधान किया गया है। ईश्वर को सर्वव्यापक जानकर लोग कहीं भी उससे छिपकर पाप नहीं कर सकेंगे तथा उसे घट-घट का वासी जानकर अपने हृदय में ही उसके गुणों का चिन्तन करेंगे। वैदिक धर्म में वर्णित इस प्रकार के ईश्वर की सत्ता को धरती का कोई भी गहराई से सोचने वाला व्यक्ति आसानी से स्वीकार करेगा। इस प्रकार वेद की शिक्षायें और मान्यताएं तथा वेद की अन्य मान्यताएं और उपदेश भी सार्वभौम हैं, धरती के सब मनुष्यों के लिए हैं और धरती के सभी मनुष्य उनके अनुसार अपना क्रियात्मक जीवन बनाकर उन्हें अपने व्यवहार में लाकर लाभ उठा सकते हैं। वेद की कोई भी शिक्षा अव्यावहारिक नहीं है। वेद का धर्म एक सार्वभौम और व्यावहारिक धर्म है। जब विश्व में सर्वत्र इस धर्म का प्रचार हो जायेगा और सब लोग इसके अनुसार जीवन बिताने लगेंगे तभी धरती पर सच्चे सुख और सच्ची शांति का साम्राज्य स्थापित हो सकेगा।

भगतसिंह – पृष्ठ १९ का शेष

उसी तरह यह भी सत्य है कि एक आर्यसमाजी और कुछ भी हो, रूढ़िवादी नहीं होता। उसके पास हर क्रिया का कारण होता है। ईश्वर, आत्मा, धर्म आदि को तर्क से सिद्ध करता है, केवल मान्यता से नहीं। अण्डे, मांस, शराब आदि का विरोध रूढ़िवाद नहीं है; मूर्ति-पूजा, जातिवाद व आत्मिक शुद्धि के लिए सन्ध्या-यज्ञ आदि करना रूढ़िवाद नहीं है; स्वदेश, स्वदेशी भाषा व स्वदेशी संस्कृति का प्रचार रूढ़िवाद नहीं है; अपने अतीत व महापुरुषों पर गर्व करना रूढ़िवाद नहीं है।

भगतसिंह का लेख सिद्ध करता है कि उन्हें स्वतंत्रता के ध्येय के लिए अपने जीवन को समर्पित करने की प्रेरणा अपने आस्तिक पिता व परिवार से मिली थी, इसका श्रेय किसी नास्तिक मार्क्स व लेनिन को न दिया जाये।

भगतसिंह के इस लेख से यह भी सिद्ध है कि वे १९२६ के अन्त तक पक्के नास्तिक बन चुके थे। फिर भी १९२७ में श्री अमरचन्द के नाम लिखे पत्र में लिखा है-'अभी तक कोई मुकदमा मेरे खिलाफ तैयार नहीं हो सका और **ईश्वर** ने चाहा तो हो भी नहीं सकेगा। आज एक बरस होने को आया, मगर जमानत वापस नहीं ली गई। जिस तरह **ईश्वर** को मंजूर होगा।'

मई १९२७ में भगत सिंह ने विद्रोही नाम से 'किरती' में 'काकोरी के वीरों से परिचय' लेख में अशफाक उल्ला, रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिड़ी, रामप्रसाद बिस्मिल, मन्मथनाथ गुप्त, जोगेश चन्द्र चटर्जी, शचीन्द्रनाथ सान्याल आदि का परिचय देकर अन्त में लिखा-'**ईश्वर** उन्हें बल व शक्ति दे कि वे वीरता से अपने (भूख हड़ताल के) दिन पूरे करें और उन वीरों के बलिदान रंग लाएँ।'

फरवरी १९२८ में 'महारथी' में बी०एस० सिन्धू नाम से भगतसिंह ने 'कूका विद्रोह-१' लेख के अन्त में लिखा है-'उन अज्ञात लोगों के बलिदानों का क्या परिणाम हुआ, सो वही **सर्वज्ञ भगवान** जाने। परन्तु हम तो उनकी सफलता-विफलता का विचार छोड़ उनके निष्काम बलिदान की याद में एक बार नमस्कार करते हैं।'

जून १९२८ 'किरती' में 'साम्प्रदायिक दंगे और उनका इलाज' लेख में लिखा है-'बस किसी व्यक्ति का सिख या हिन्दू होना मुसलमानों द्वारा मारे जाने के लिए काफी था और इसी तरह किसी व्यक्ति का मुसलमान होना ही उसकी जान लेने के लिए पर्याप्त तर्क था। जब स्थिति ऐसी हो तो हिन्दुस्तान का **ईश्वर** ही मालिक है।'

नवम्बर १९२८ 'चाँद' फाँसी अंक में देशभक्त वीर सूफी अम्बा प्रसाद के विषय में लिखकर भगतसिंह ने अंत में लिखा है-'आज सूफी जी इस देश में नहीं हैं। पर ऐसे देशभक्त का स्मरण ही स्फूर्तिदायक होता है। **भगवान** उनकी आत्मा को चिरशांति दे।'

प्रियपाठकवृन्द! ये सभी प्रमाण श्री चमनलाल जी द्वारा सम्पादित पुस्तक से लिये हैं। सम्पादक का उद्देश्य भगतसिंह के नास्तिकवाद व समाजवाद (कम्यूनिज्म) का प्रचार करना है। वे इस बात से परेशान हैं कि भगतसिंह की शहादत के चालीस साल बाद तक अर्थात् १९७१-७२ तक भगत सिंह को 'वीर क्रान्तिकारी' ही समझा जाता रहा। श्री विपनचन्द्र द्वारा १९७०-७१ के आसपास प्रकाशित और भगत सिंह द्वारा १९३० या १९३१ में लिखे गये 'मैं नास्तिक क्यों हूँ' लेख को सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज मानकर नास्तिक भगतसिंह का प्रचार किया जा रहा है। यद्यपि हम तो भगतसिंह का सम्मान बलिदानी देशभक्त होने के कारण करते हैं और उनके नास्तिक होने से वह सम्मान कम नहीं होगा तथापि प्रसिद्ध कम्युनिस्ट लेखक श्री कुलदीप नैयर द्वारा 'शहीद भगत सिंह के क्रान्ति-अनुभव' में लिखे शब्दों पर भी ध्यान देना चाहिए-

'भगत सिंह के पिता ने उसे बताया कि महात्मा गाँधी ने अंग्रेज सरकार को यह कह दिया है कि अगर इन तीनों नवयुवकों को फाँसी पर लटकाना है, तो उन्हें कराची में हो रहे कांग्रेस सम्मेलन से पहले लटका देना चाहिए। भगतसिंह ने पूछा कि कांग्रेस का कराची सम्मेलन कब हो रहा है? पिता ने कहा-मार्च के अंत में। भगतसिंह ने इसके उत्तर में कहा कि यह तो बहुत प्रसन्नतादायक बात है, क्योंकि गर्मियाँ आ रही हैं, इसलिए काल-कोठरी में सड़कर मरने से फाँसी पर चढ़ जाना अपेक्षाकृत अच्छी बात है। लोग कहते हैं कि मौत के बाद बहुत अच्छी जिन्दगी मिलती है, परन्तु मैं पुनः भारत में ही जन्म लूँगा, क्योंकि मैंने अभी अंग्रेजों का और सामना करना है। मेरा देश जरूर आजाद होगा।'

श्री सुभाष रस्तोगी ने 'क्रान्तिकारी भगतसिंह' में लिखा है-एडवोकेट प्राणनाथ जी ने अपने एक संस्मरण में इस प्रकार (उल्लेख) किया है-फिर मैंने पूछा-'आपकी अंतिम इच्छा क्या है?' उनका उत्तर था-'बस यही कि फिर जन्म लूँ और मातृभूमि की और अधिक सेवा करूँ।'

क्या पुनर्जन्म को मानने वाला व्यक्ति पुनर्जन्म देने वाले (परमात्मा) की सत्ता से इन्कार कर सकता है? और पुनर्जन्म लेने वाला आत्मा क्या स्वयं पुनर्जन्म ले सकता है? जब शरीर की मृत्यु के बाद पुनर्जन्म लेने वाले आत्मा की सत्ता में सन्देह नहीं, तो पुनर्जन्म देने वाले परमात्मा के अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न क्यों? और जब नास्तिकों की दृष्टि में ईश्वर है ही नहीं, तो उसका विरोध क्यों? ❐

अन्न से अत्ता

(सोम) ऐ मेरे संजीवन-सुधा के सुसंपन्न स्रोत! अपने दिव्य प्रवाहों में तू **(सहस्रिणं रयिम्)** हजार धनों का एक धन **(आपवस्व)** बहा ला। **(अस्मे)** हम में **(श्रवांसि)** अन्न, बल तथा दिव्य संदेश **(धारय)** स्थापित कर।

आपवस्व सहस्रिणꣳरयिꣳसोम सुवीर्यम्।
अस्मे श्रवाꣳसि धारय।।5।।

ऋषिः- निध्रुविः =निश्चित ध्रुव।

जीवन एक चमत्कार है। मैं इसे देखता हूँ और आश्चर्य-चकित रह जाता हूँ। शरीर क्या प्रकृति के परमाणुओं का पुंज-मात्र ही है? परमाणुओं का पुंज देखने, सुनने, सूंघने, छूने और चखने कैसे लग गया? इसमें अपने आप बढ़ने, अपनी क्षतियाँ पूरी कर लेने, बाहर के पदार्थों से अपने आप को पुष्ट करने की शक्ति कहाँ से आई? फिर आचार, व्यवहार, विचार की प्रवृतियाँ किस प्रकार उदित हो गईं? जड़ प्रकृति ईंट है, पत्थर है, सूखा काठ है। उसमें चेतनता का चमत्कार कहाँ?

सजीव शरीर अन्न को पचाता है। उसे अपना अंगभूत बना लेता है। शरीर जितना स्वस्थ हो, जीवन जितना विकार-रहित हो, उसमें अन्न-ग्रहण करने की शक्ति उतनी ही अधिक होती है। अत्ता का अन्न खाना क्या है? निर्जीव को सजीव बना लेना है। जो पदार्थ पहिले जड़ था- चिति से शून्य था, अब सजीव शरीर का अंग बन कर स्वयं सजीव हो रहा है। अन्न अत्ता बन रहा है।

अन्न बल का रूप धारण करता है- यह एक और अचंभा है। जीवनी शक्ति दूध को, धान को शरीर की जीती-जागती शक्ति में कैसे परिवर्तित करती है? न घी पहलवान है, न आम और न बादाम। परन्तु एक सजीव शरीर इनका प्रयोग करता है और पहलवान बन जाता है। क्या यह जीवनी शक्ति की अद्भुत विभूति नहीं?

यह बल पाशविक बल है। मानव बल आध्यात्मिक है। वह उससे भी बड़ा चमत्कार है। मनुष्य अन्न खाता है और तदनुसार मन को बनाता है। सात्विक अन्न से सात्विक मन, राजस अन्न से राजस मन और तामसिक अन्न से तामस मन बनता है। अन्न से मन बन रहा है। इन दो की आपस में तुलना क्या?

योगी का अन्न भौतिक नहीं। उसके भौतिक आहार में भी अध्यात्म की झाँकियाँ हैं। उसका जीवन संगीतमय है। उसकी सम्पूर्ण क्रिया श्रवण-रुप है। वह दिव्य रागों को सुन रहा है। उसका शरीर एक वाद्य-शाला है। प्रत्येक इन्द्रिय अपने अलौकिक गान गा-गा कर उसे मस्त कर रही है। वह खाता है, देखता है, सूंघता है और इन सब चेष्टाओं में अपने प्रभु की झाँकी पाता है। उसके दिव्य संदेश को सुनता है। उसने जीवन का मानो साक्षात्कार किया है।

अन्न पचाने की, अन्न को अत्ता बनाने की, अन्न को मन का रूप देने की, अन्न तथा मन दोनों की लयें किसी दिव्य संगीत में विलीन कर देने की शक्ति 'सोम' कहलाती है। वह शक्ति बह रही है-निरन्तर बह रही है। वह दिव्य संजीवनी-हजार सम्पत्तियों की एक सम्पत्ति-बह रही है। उसके बिना कोई सम्पत्ति सम्पत्ति नहीं रहती। भोक्ता में भोक्तृत्व न हो, तो भोग बेकार है।

ऐ मेरे जीवन के आध्यात्मिक स्रोत! बहता जा! बहता जा! मेरे अंग-अंग में नई-नई शक्ति लाता जा! लाता जा! मेरे अन्न को अत्ता बनाता जा! बनाता जा! इसे मन का रुप देता जा! देता जा ! मेरे भौतिक भोगों को विभूतियाँ बना-बना कर चमकाता जा! चमकाता जा!

प्रकाशक, मुद्रक सहदेव द्वारा अपने स्वामित्व में, प्रियंका प्रिंटर्स पुरानी सब्जी मण्डी जींद के लिए ऑटोमैटिक ऑफसैट प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६१०२ (हरि०) से प्रकाशित। सम्पादक : सहदेव

।।ओ३म्।।

स्वामी भीष्म जी महाराज के शिष्य उत्तर भारत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक

पं० चन्द्रभान आर्य

की चुनी हुई रचनाओं का संकलन

(हरियाणा साहित्य अकादमी के सौजन्य से प्रकाशित)

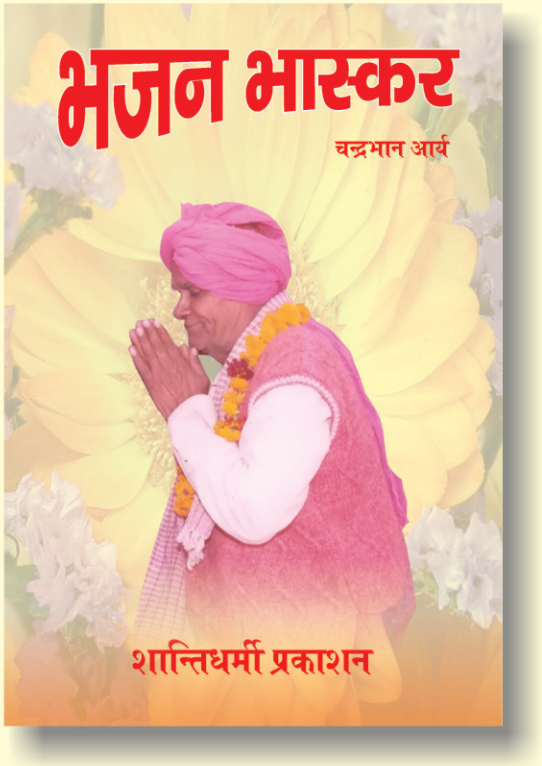

भजन भास्कर

❖भक्ति ❖प्रेरणा ❖शौर्य ❖नारी, चार सर्गों में विभक्त

पृष्ठ : 98, मूल्य : ₹80 (अस्सी रुपये) केवल
पंजीकृत डाक से मंगवाने के लिए मूल्य अग्रिम भेजें।

प्राप्ति स्थान

शांतिधर्मी प्रकाशन
756/3 आदर्श नगर सुभाष चौक जींद-126102 (हरयाणा)
दूरभाष : 80596 64340, 94162 53826

R.N.I. No. 70866/99 शान्तिधर्मी हिन्दी मासिक (मार्च, २०१५) P.R. No. : PKL 150-A/2014-16

शांतिधर्मी एक अद्वितीय पत्र है

इसमें परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिये स्वस्थ और सुरूचिपूर्ण सामग्री होती है।

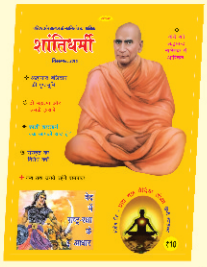

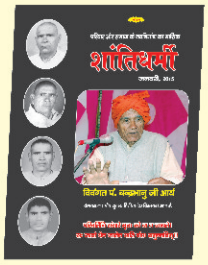

- ☆ **शांतिधर्मी** में धर्म-दर्शन के रहस्य, राष्ट्र व समाज की ज्वलंत समस्याओं पर अधिकारी विद्वानों के श्रेष्ठ विचार होते हैं।
- ☆ **शांतिधर्मी** भारतवर्ष के गौरवपूर्ण इतिहास की झलक दिखाता है।
- ☆ **शांतिधर्मी** वह मार्ग दिखाता है, जिसे पाने के लिये लोग भटक रहे हैं। परिवार में समाज में सह-अस्तित्व व अन्तरात्मा में सुख शांति का सन्देशवाहक है।
- ☆ **शांतिधर्मी** उस अध्यात्म का प्रचार करता है-जिसे अपनाने में देश-काल, जाति, मजहब, सम्प्रदाय की सीमाएँ आड़े नहीं आतीं। यह सच्चे ईश्वरीय ज्ञान का प्रचारक है।
- ☆ **शांतिधर्मी** स्वाध्याय भी है और स्वस्थ मनोरंजन का साधन भी।
- ☆ **शांतिधर्मी** प्रत्येक श्रेष्ठ-धार्मिक-राष्ट्रप्रेमी-मानवतावादी-व्यक्ति के लिये एक विचार-सूत्र है। प्रत्येक श्रेष्ठ परिवार का आभूषण है।

शांतिधर्मी पढ़िये-

अपने प्रति, समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति, ईश्वर के प्रति सर्वांगीण दायित्वों को जानिये।

जीवन के जटिल व गूढ़ रहस्यों को सहज ही सुलझाईये।

मूल्य : एक प्रति : 10.00 वार्षिक : 100.00 आजीवन : 1000.00

शान्तिधर्मी कार्यालय
756/3, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक)
जीन्द-126102 (हरियाणा)
फोन 9416253826, 9253308840